2 8 121 E---

ऋखौरी सविदानन्द्सिंह ऋध्यम्, सरस्वर्ता-भएडार बॉर्कापुर, पटना ।

स्रजमसाद खन्ना हिन्दी-साहित्य प्रेस जानसेनगंज, प्रयाग :



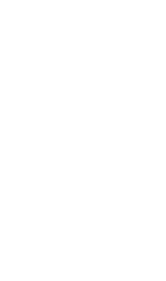
किया है, जो उचित भी है। परा-साहित्य की स्नाजकल हमें बतनी स्नावश्यकता भी नहीं है, जितनी कि गण की। संस्तु ।

डब ही दिन हुए, 'हिन्दी-गग-सबावडी' के नाम से मैंने हिंदी के दस-यांच घुरंपर लेखकों के सरस लेखों का एक डीटा संगद संकलित किया था। संगद कैसा है, इसे कहने का ग्रीफे अधिकार नहीं। आज उस संग्रह के प्रकारक सहौदय की अनु-मति से एक दूसरा 'संग्रह' उपस्थित करता है। यह संग्रह पणा का है, श्रतः इसका नाम मैंते 'हिन्दी-पण-रत्नावली' रस्या है। यह भी नहीं 'स्टैन्डर्ड' के लिये समहीत किया गया है, जिसके छिए कि 'गग्न-रत्नावर्ता' का सकलत हुना है। जिन कवियों की सरस कवितार्ग इस पुलक में सकलित की गई हैं, उनके संबंध मे दो-दो चार-चार शळ नीचे ठिलं आते हैं। इसके पहले यह कह देना उचित होगा कि इस पुस्तक में केवन ऐसी कविताओं को स्थान दिया गया है. जिनमें भगवद्भक्ति, विश्वद्व प्रेम. बीर भाव. प्रकृति-सीन्वर्य और नीति नैपुण्य का चित्राकण देखने मे आया है। श्रमार रममय पण, चिनाक्ष्यक चन्नारपण और सरम होने हुए भी विद्यार्थिया की र्राष्ट्र से, उस समझ से सकल्ति नहीं किये nn F

सबसं पहले चहबरहायाँ आनं हैं। यह जातीय कवि थे। हिन्दु-जाविक अतीन चिन्ना का उन्होंने खरित किया है। हिन्दु भी का उत्थान और पनन देखना हो नो चहु का शामों पड़ डालन, इनमें महाजवि के सभा लख्या मिलने हैं। हिनाल भाषा में होने हुए भी इनका बृहन्दू प्रत्य हिन्दी की असून्य सपित है। होत असरा आधिमान है। इनके बाद महान्या कथीरहास को त्यान दिया गया है। इस सन शिरोमणि के दिया में कहा हो क्या जा सकता है 9 कत्तीर ने 'उधर' को बात कही है. इधर' को नहीं।



िहै। रचना में कार्य मिठास और चीत है। अब महाकृति केशवदास को छीजिए। भाषा-साहित्य में सूर, तुलसी भीर कवीर के बाद इन्हीं का स्थान है। यह काज्याचाय थे। इनकी कविता हिन्द और दुरुइ अवस्य है, पर सरसना और चमतार सं ख़ाली नहीं । हिंदी भाषा के यह 'माय' हैं। इनके अनन्तर भक्तवर रसतानि और तत्परचान् महाकति सेनापति की हाविर रचना की यानगी भितेगी। पहले को रखना विशुद्ध पेमकी स्वन्त्र बारमी और दूसरे की कविता कवि-कला-किन्न श्राभ्यणीं की, मंजूपाहै। इसके बाद सतवर मुन्दरशस जी की 'बानी' दृष्टिगत होगी। उनके पद्यों में सरमता के श्रतिरिक्त बहुत कुछ पते को भी ^{बात} हैं।श्रुगार-स्वम्प्य विद्वारों को भी हमने स्थान दिया है, पर धवराईप नहीं, उनकी भक्ति और नीनि-सवधी स्कियों ही संबर्धत की गई हैं। हम कवि-पक्ति में इन्हें केशव के बाद प्रतिष्ठित करेंगे। विहारी का भी, भाषा-माहित्य में, एक विशेष स्थान है, इसमें सर्वेह नहीं । तत्परचान त्रिपाठी-वधु-भषण और मतिराम-श्रीर फिर लाल का नवर आता है। भूषण हिंडीभाषा से बोर रस के एक मात्र कवि हुए हैं, इनके सब र में इनना हो कहना वर्षाप्त होगा। मतिराम का भाषा-सीष्ठव अपवं बर्गन है से चट्टेनी और सरसता श्रमुठी है । लाल वरेलमङ् के बीर-कवि व । बार-माहित्य मे अवस्प की कविता के बाद उन्हीं की रचना के। स्थान मिलना चाहिए। च्यय महाकवि देव की लीजिए। यह भी एक उंच काव्याचार्य से । इनकी कविता सुधारम में हवी हुई है। प्रयेक मुक्ति अमृन्य है। माधुरे प्रमाद श्रीर श्रोत जीनोही गुर्गा की उन्होंने अपनी कवि ताम संघ निभावा है। माहित्य-जगन को उस महाकति पर श्राम मानं करना वाडिए। इनके बाद पुन्त हैं। इनकी मुक्तियाँ नीति-सबधिनी हैं. जिनमें गागर में मागर भरने का प्रयन्न किया गया











ĸ

पहुँचे सु जाय तसे सुरंग, मुख मिरन मूपे जुरि जोध जग ॥२२॥ वळटी सराज प्रविराज बाग, यकि सुर गगन, धर धमत नाग ३३ करमान बान छट्टाई अपार, लागत सोह इमि सारि घार ॥३४॥ धमसान बात सब बीर रेंग्स, घन श्रोत बद्रत खर रखन रेत 1341 सारे बरावक के जोध जोड़, परि रुंड सुड श्रारि सेन सोड़ ॥३६॥

परे रहत रिन-स्पेत अपि करि दिक्षिय भारत रूप । जीति चन्यां पृथिमात रिन, सक्छ सर अय सूच ॥३॥। पश्मावति इमि ने चन्यो हर्गय गत प्रथियज्ञ। एतं परि पतमाहरू हा भई ज श्रांति अवाता।।३८॥

मई ज्ञानि धवान प्राय सामयदीन स्रा द्यात गेरी प्रथिश र बीर बूरत रतन गेरा। क्राच त्रीय राज्य अनव श्रीय पूर्वी अन रितिया बान नाहरू । १ र तम वधर मर स रहा। वर्षे पहार ५० मार ४,१मॉर उसात सन्तमस्य त श्राय हकारि ज्यार की राज्या जान्ताल उठाउटन

672 1-1 की राम जा बना के तक कर कि रावा कि साथ प्राप्त प्रशास क क्षिप्रदेशिक्षत्र पर एक एक एक सामान विकास कर ध्रावरीकाची पर उत्पत्तात ने सातन, प्रवासीक लग्न नुमार, त्त्रका पाल का प्रवास अर्थित सर्थाम चल्लान क्षेत्र अपान साली ज स्थलन संबद्धक दिया :



मन के मारे वन गये, धन तक्ति यस्ती माहि। कह कवीर क्या की जल, यह सन ठहरे नाहिं। ७०॥ कविरा सोया क्या करे. जागन की कह चौंप। ए दम हीरा हाल हैं गिनि-गिनि हरि को सौंप 11980 र्मास शहारी मानवा परतद राद्यस श्रम। साकी सगति मत करी, परत रग में भग 4उर# डिन्ड के दाया नहीं, मिटर तुरुक्त के नार्दि। कह कबीर दो ों गये, लख' चौनमी माहि ॥७३३ कथीर मनवाल नाम का, सह सनवाल नाहि। नाम-पियाला जो दिये सी मनवाता नार्डि १७४॥ भग्नासर। साउ के ठडा पानी पीता देखि विश्वती चुण्डी, बर त्याचात्र जीव ४४५॥ संस्थित है अप-उन् भाषा बन्न सीर ! भाषा सनग्र सन्ति है सन सन गोध गयोग (७६)। पोध्य पंट पटि जग मुख्या, पश्चित हत्या न कोय । डाई अन्दर पेस का पी सो पटित होय। अध्य एके साथ सब सबै सब साथे सब नाव। तो मिन सेवे सुरु को, फर्न फर्ल अधाय ५४८॥ सपने में साह मिले, सीपन लिया नगापः श्रास्त्र न स्रोत इरपता, मति सूपना है जाय॥७९॥ साक पड़े दिन चीतवें. चक्ची वीव्या रोगा। चल चकवा' या देसका जला के तालेख १८०॥

१---नामः। २---मिटः १---नानानाः। •---नन्यलोकः।



कवर्षुं कान्ह कर छोषि नेद पग है कि घावत । कब्रु धरान पर विठिये, मन महं कछु गावत ॥ कब्रु उडिट चर्मे भागको, भुद्रहम करि भाषत । सूर शाम-मुख देखि, महर अन हरप बद्रावत ॥२॥

्ड होटी-होटी गुड़ियां श्रेंगुरियां होटी, हमीटी नय ओति मोती मानों कृत दलन पर ॥

ललित खांगन राली, दुमक दुमक खोली, मुलक कृतक बार्ज पेजनी सृदु सुम्बर ॥

हिक्किनी फरिन फरि हाटक रमन जरित सुदू कर कमर पहींच्यां रुचिर वर ॥

!पर्या पिछीरी भीती और उपमा भीती , बाटक दामित मानी चीद बारी बारिधर ॥

वालक दामान माना खाद बारा बारधर ॥ उर बधनवा कठ कठूना महले बार, बनी उटर्सा, मिन हिन्दू मृति सन हर ॥

वना उटकार, मास १ -व्यु मुनि मन हर ॥ ६ नवर्गात नेना । स्वयंन बित चारे,

मुख साचा पर वारो श्रामित समग्र मर' ॥ वहुद्दी दन बन नन्द गर्मा, बाल दृष्टि,

ार्थन सन्दार्थन प्रेस सुचर ॥ 'इतरह किनोह होया है है देन्द्रीय स्ट्रेस

्राचाम अन्यस्य त्राच्या स्थान

. ६८ सम्मान सन कासनाय करे

त्रमुम् त मन काम गाव कर इ.स. राष्ट्र पुरुषयन भी अन्न प्रश्ना यह द इ.स. रहे व



मैया, मोहि दाउ यहुत सिमायो ।
मोमों कहत, मोल को लंगों, तू असुमही कय जायो ॥
बहा करी यहि हिस के मारे, खेलन ही महिं जातु ।
तुति पुति कहत कीन है मात्र, को है सुन्धों तातु ।
गोरे नंद, जसोश गोरी, तुम कत स्थाम सरीर।
सुदुर्ध देदै हमत बाल मय, सिभी देत वर्ष्यार ॥
दुर्ध है हमत बाल मय, सिभी देत वर्ष्यार ॥
दुर्ध हो को मारन सीसी, बाविंद कपडुँ न सीभी।
मोहन को गुण हिम मनेत लिए, जम्मिन मुनि सुनि सीमी।
सुन्ध कान्द क्लमद्र प्यारं, जनमत ही का पूल।
सरस्याम मो गोवन की मीं, ही सिया नू पुन ॥॥

सैया सेरी, सैं सामस्त्र नारित्रायों।
सोर अव सैयन के पाई सनुस्त्र सेरिट पदायों।
सार पर अस प्रभारते आप सार्य के प्रधानों।
से बाद कर बाद सा दात दात कि किया पायों।
संबाद बाद सम्बंगित के हैं, बादस्त हुस एक्स एक्स पो है
रूनना सर्थित स्थान के भी उनके कर परिवार्ग से एक सर्थ हुन सर्थ कर हों।
सर्थ सर्थ हुन सर्थ कर जानि प्रभा वाया।
सर्थ स्थानी ठहुर कर होंगित नार न्यारों।
स्राध्म नार्थ स्थान हों। यह कर होंगित कर

रसारा मेग मग ध्वार चौगों लोटो ? "कर्नावार मात्र दुर प्यंत मद्र कृष्णत है झोटी ॥ तृता करन वर्णक को यो से है लोनी मोटी।

a utgen Cat ett i temiga unut :



हिन्दी-पग-रत्नावली

दे मैया, भें ररा चक होरी।

जाइ लेंद्र आरे पर शयो, कान्द्र मोल लै राही कोंगे॥ ले बाये हीन स्थाम तुरत ही, दिन रहे रेंगरम बहु हीपी। मैया निनः चौर को राजै, बार-बार हरि करत निहोसी॥

बोरि िय मत्र मन्त्र भगकं, राज्य स्थाम नद् की पोरी। तैनइ द्दर तमड सर बातक, कर भेंबग-चकरिति की जारी॥ देखाँत कर्नान जमान यह छाव, वि.मान बार-बार मुख मोधी।

स्रदाम अनु हंनिकास कलत, प्रजन्यन्ता हम द्वारति तोरी १२ æ क्षात्र में गाउ चराप्रव तेही । इन्हाबन र सानिसानकत यहन दर में हैही।

णमा चर्याट रूटा राज बार, दल्या चर्यनी भाति। तर्र र तक का बाउना रेख आयत हैहै शांति॥ व्यव रात राज ं तरन रर व्यव हैं सानः। कुर रम कर हुन्द्र र र अमृद्धि श्राम । 4 47 4E

भूरक , राज्या र प्राची हेक्सरझा

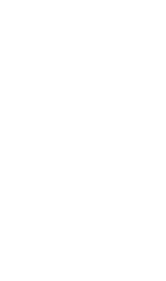
"" " " 147 AA.

ক' ৷ লে ল ৷ এ আপুনিবা লাভ লড ৩০০ জিলা চলজগলাত **হন্দী**বা दुर्भ में घर कर राज्य स्वयं करहेया । ६पुत्र मार्ग के बार बाहन तमी मास्त्रननादी । महामान्य कार साहा, दवकार **दा जा**ही गरेफा



हिन्दी-पत्त-रस्गावली

देशन हैं श्री रमान्यमन नारायन प्रभु जम। वन में पुन्दायन मुदेग गय दिन सोमिन धास ।। या बन की बर बाल्किया बनही बनि कार्ये। सेस सहैम सुरेस सनेम न पार्श्व पार्थ ॥ ४ ॥ तर प्रतिक दूसलात कल्पतक सम सब लावक। विन्त्रामनि समें सकत भूमि विनित्त कनदायक ।। तिन महें इक जुकरपत्रक लिया रही अगमग जीती। तात मुत्र करत कुल सकल होय मांन मानी ॥ ५॥ तरे मृतयन के स्वरंदर्य अस्यात करत कति। बर "दल्लर गाव अन्तरा निन पर तह पति। भारतका मुख्याला भार नहा पान कार्न निर्देश PHICHT HE C IN THE C LINES IN S. II ना लक्ष्म भर यह एक भ तन और हाते. were the second of the second of 4 18 6 - 1 + A+ + 1 + H + H + H 1 H A | " " and was a " and well of the the art i but न न व ६ न ० चर्रांच प्रशेष राष्ट्री attally are a site forest page नर , क ना मार कहा । क सन्तर क्षा व्यक्ति 4 1 24 E 55 ** . ** ** ** * * * * * * * * * * प्यक्त राम र अपन्यास स्टार्क नृत्र करा



हिन्दी-पद्य-रत्नावर्छी सब तिर्देग्भ धरमस्त पुनी। तर श्रह नारि चतुर सब गुनी ह सब गतन्य पंडित सब न्यानी । सब कृतन्य नहिं कपट स्थानी ! शेश

38

राम राज नभगेस' सुनु, सचराचर जग माहि। काल-करम-सुभाव-गुन-कृत दुख काहुहि नाहि॥३॥

भूमि सन सागर मुमेखना।एक भूप रचुपति कोसला। भुवन अनेक रोम प्रति जासू यह प्रभुतो कछ बहुत न तास् सो महिमा समुकत प्रमु केरी यह बरनत द्वीनता घनेरी।

सो महिमा ग्रांगस जिन्ह जानी । फिरयहिचरितनिन्हहुँ रतिमानी ह भोड जाने कर फल यह जीजा। कहिंद महाम्जियर हमसीला राम राज कर सर्व संवदा। वर्तन तसर्वे फ्लीस सारवा #

मब हदार सब पर उपकरी विष-चरत-सेवक तर नारी। स्क-नारि-अत-रत सथ भागे । तेमन-यय-प्रमायति-हित-कारीध

दह जीतन्ह पर भेद जर, गरतक मृत्य-समाज । जितह मनहि अस स्वियं जग रामचेंद्र रेराज ॥ ४ ॥

फुलहि फलहि सदा तर कानन । स्ट्रीड एकसँग राज प्रचानन ॥

्रु स्वा मृग सहज वैरु विसराई । सबन्दि वरसवर प्रीति बडाई ॥ े कुजर्टि स्वा मृग साना उन्हा । स्वभव बर्गट वन कर्गट सनहा ॥

मीतार पत्रन स्रोम यह सदा। गुजन ऋषि नेइ चलि सकरेदा ॥

१ सक्दः, काक मुग्दि, सबद म, राम चरित कद २८ है।



द्विन्दी-पद्य-रबावली

રફ.

राम करहिं आतन्त्र पर प्रीनी। नाम सांवि सिखावहिं नीती। इरिषव रहिं। नगर के लोगा। करिं सकल सुरहालम मोगा। कहितिसिविधिदिं समावर रहिं। औरसुरित्यरान्यति वहहीं। दृहं मुत्र मुन्दर सीता जाव। तब कुम वेद हुरानी गर्व। दोड विजयो विचयी गुनसीर। इरिन्जीविध्य मन्द्रैं धरित्स्

दुइ-दुइ मृत सब भ्रातन्द करे। मये रूप गुनर्साङ घेनेरे।

ज्ञान-गिमामोतीत स्त्र न, माया-मन-गुन-पार ।

मोइ मधिवानद्यम कर नर-चरित उतार ॥ ७ ॥ गोगाई

पानकाल सरज् करि मजन। यैठित सभा सङ्गाद्विज सजन ।। वट पुरान बासद्व बन्धानि । सुन्नि राम जदापसय जानिहैं ॥ अनुजित सञ्जून भोजन करती। देख् सफल जननी सुख भरहीं ॥

ज्युता क्यां प्रमुख्य स्थापन क्यां स्थापन क्यां स्थापन स्थापन स्थापन क्यां स्थापन स्थापन क्यां स्थापन क्यां स् सूर्या के द्रारम सुन्तरा क्यां त्यास स्थापन क्यां स्थापन स्थापन क्यां स्थापन क्यां स्थापन स्थापन क्यां स्थापन स्यापन स्थापन स्य

मुन्द विस्तरपूर्व श्रांत स्वयं प्रवारं । यह सन्युद्धिकृतिया यक्कविष्यः सब्दे के पृत्र पृत्र शांति पुरस्ता । समस्याति पायन विषय नकाः॥ तर श्रद्धत्तारिसम् सुन्साति । तस्युद्धिसम्बन्धिनातिनवानीरिः॥

ऋव (पुरी शामिन्ड कर मृद्य-सपदा-समाज । सहस सप बॉट कॉट सहित वह तृष राम विराज ॥८॥

भवाद भवाद

नारवादि मनकादि युन्यमा । उरमन लागि वेरमलायोमा ॥ दिन प्रति मकल काला थाप्रति । देखि नगर विराग विमरावर्षि ॥



हिन्दी-पद्म-रत्नावली

बैठे बजाज सराफ बनिक धनेक मनहुँ कुनेर ते। सब मुखी सब सबरित मुन्दर नारिनर सिमु जरठ जे ॥१३॥

34

उत्तर दिसि सरजू यह, निर्मेट जल गंभीर । बाँधे घाट मनोहर, स्वल्प पंक नहिं सीर ॥१८॥

चौपाई

दूरि फराक रुचिर सो पाटा। अहँजलिपबहियाति गत-उाटा ॥ पनिषट परम मनोहर नाता। तडा न पुरुष कर्राह समनाता॥ राजघाट सब विधि सुन्दर घर । मर्जाई तहां धरन चारिउ नर ॥ सीर-तीर देवन्द के मंदिर। चहुँदिसि जिन्हके उपवन मुन्दर॥ कहुँ कहुँ सरिता-तं र उदासी यसिंद ग्यानरत मुने संन्यासी । शीर-सार शुलसिका सुदाई। एन्द-मृन्द बहु सुनिन्द लगाई n पुर-सोमा कछु बरनि न जाई। बादिर नगर परम रुचिराई॥ देखत पुरी असिङ अर्घ मागा। यन उपवनवापिका तहागा ॥१५॥

वापी तड़ाग खनूप दूप मनोहरायत सोहर्हा। सोपान सुन्दर नीर निर्मल देखि सुर मुनि मोहर्ही ॥ बहु रंग कज अनेक सम कुर्जीई मधुप गुजारही। श्राराम रम्य पिकादि समारव जनु प्रथिक हंकारही ॥१६॥

रमानाथ अहँ राजा मी पुर वरनि कि जाइ। श्रानिमादिक सुख संपदा, रही अवध सब हाइ ॥१७॥

(राम-चरिव-मानस)

६—नंबान<u>ु</u>हुन

्रिक्ट्यार्ट सम्बद्धाः (स्टब्र्ट्

-

कारतार यानि सभी बाकसान वहीं कार्य वाह है सहाय में तिसीत के विकास सी ? बैसूबी बारेस बृद्धि कर बौत्ता साँह, बारस साम बाद कहाँ सीट, बाद सी !! बुद्धि विद्यारी कीम बादमी कार्य में !! ब्रिटें विद्यारी कीम बादमी कार्य में हैं बेटें कार्यात सह बाद हैं बारस सी देवा की निवस मानी बीडिय बुद्धानु साहु, अस विकास, दुस नेही विद्याद की !!!

٠.

वारती विकास विकास व्यास्थान वार्ते.

तार सीमार्थ के राज्य स्थान स्थान के हैं है की सोमार्थ किया के हैं जाने कुछ है है को मार्थ के हैं के स्थान के हैं को स्थान के हैं के सुद्ध कुछ है के स्थान के हो सी सीमार्थ के सिंग कुछ है के सामार्थ के हैं के सामार्थ के सिंग कुछ है है है सामार्थ के सिंग कुछ है है है सामार्थ के सिंग कुछ है है सिंग कुछ है सिंग कुछ है है

عد

जो हा सुर केरीय सुरक्षे है. 'कर सिंह बड़ी बड़ी रही हते प्रति है.

३० हिन्दी-पद्य-रत्नावळी

कहां तात, मान, भान, मगिनी, भामिनी,भामी, छाटे छोटे छोट्टा सभागे मारे मागिरे॥ हाथी छोरो, मोरा छोरो, महिष दुपभ छोरा,

हुरी छोगे, सेवें सोजगारी जागि जागि रे ॥" तुलसी विरोधि खड़तानी जातुधनां कहें,

बुलसी विटोकि श्वकुतानी जातुधःना वही, "बार बार वही, निय कपि सोंन लागि रे ।३। ...ध

यहे। विकराल भेष देखि, मुनि सिंह-नाद, उठ्यो सेपनाद सविकार पदै रावनी ।

थेग जीत्यो मारत प्रताप मारसड काटि, कालक कराजतः यहाई जीतो वावनी ॥

तुरुसी संघाने जानुबान पश्चिमान मन,

"जाका एमा दून मा मादिय श्रवे श्राप्तनो ।" काहे की कसरु संघ सन बानदन र हर

का कुत्तर राज्यसम्बद्धाः विद्यम् बरामा । हिन्दर के विद्यावनी ॥४%

्**८** पाना पानी पाना स्वयं राती श्राहरानी क^{र्ड}

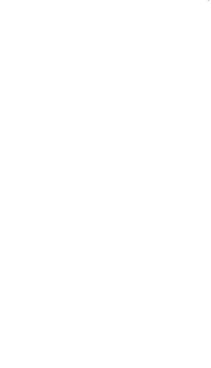
श्चनायानायनास्य र'नाश्चरताक्ष्यः जनिर्देशसाः,सस्तित्वानिसन् वालि है ।

ज ति तेथरा ।, गति चानि गर बालि है । बमन सिमार, सें सपन संभात्त न

त्रानन सुरक्षन कहें। स्या र काक पालिहै ?" तुवसी सेंद वै सीटि हाथ कुति साथ कहें

'कार राजीर ताल में स्टब्से केता के जिहें।" बापने विभीवन प्राप्ति कर बार कहती,

'वानर बड़ा वराइ वर्त पर चालि**है**" ॥५५



33 हिन्दी-पश-रन्नायली माली निहारि बारि सारि वै वै गारि वर्दें।

' यावरे, गुरारि धैर भीन्हों राम राय मीं" हटा

.33

नवन मा राज गुग बाइत विसर-वर, िन दिन स्थित भक्त गुरागीक मी ।

नाना उपयारि परि शारे सर सिंह मनि

ह य न विमाय होने वर्ष में महायह सा त

राम की र ताय व स्मापनी मधीर-सृत्, उत्तर प्रेशी र-वार सावि सरवाह सा ।

क्षतान हर स्थाप्त वह जातमप्त, ere era multagelt umm sitta nen

(state at 1

27 1 4

4 6551 # 1 1 410 1 44 10

1 12/14 19 (16 274 12) and the second of the second of the second



मुँड मुड़ायो बादि ही, मांड भयो तनि रेह #१६#

होत भले के अनमले, होइ दानि के सूम। होइ कुपूत सुपूत के, ज्यों पात्रक में धून ॥१७॥ वरिप विस्व हरिपत करत. हरत ताप, श्रव, ध्वास । तुलसी दोपन जलद की, जो जल जरै जबाम ॥१८॥ सारदल के। स्वांग करि, सुकर की करतृति। नुजमी तापर चाहिए, कीरति, जिल्ला विभूति ॥१९॥ लोक-रोति-पृत्वी सहै, प्रांती सहै न बेहा। तुलमा ते। शांजी मह सा शांपरी न होड ॥२०॥ सरमागत कर जे नज"र, निज जनिति जनुमानि । त तर पामर पापस्य तिर्दे विलाकत हासि ॥ रता तुलसी मिटेन सेश्वतमा किये केटि राम-साम र्रदार समार प्रांतिका वितासकारुग्याचे समा॥२२०॥ सार जानी सार शंभा तम सेए राजा पानि जनमं जारे पत्र भर रागर्वप की जान। २४१ दुरसा प्राप्तस्य के समय असे के किया सीन चार ना राष्ट्र प्रोगीको रमे पछिते कीस ॥२४६ तुत्रसार । र कतन हो परस्मत पाप-पहार ।

क्षिप्र साला खांचल तथी देल. स कार कियार (२५॥

, नागवंता)



36

रोश कीन्हेंसि कोई निभरोमी, फीन्हेंसि कोई वरियार । छार्राहें से मय कीन्हेंसि, पुनि कीन्हेंसि सब छार ॥२॥

चीवारे

धनपति बहै जेहि क संसारः । सदै देव नित पट न भेंडारः ॥ अदित जगत इस्ति की चौंदा । सम्बद्धे सुगुति राजिहिन बोंदा ॥ ता कर दृष्टि जो स्व उपादी । मित्र सत्र कोड विसरी नाई ॥ परित पर्तम न विसरी कोई । पराट गुपुत जहां जग होई ॥ भोग सुगुति यह भांति उपाई । सम्बद्धि स्वयाने कापु न स्वाई ॥ ता कर बहै जो स्वाना पियना । सम्बद्धे देव सुगुति कीयना॥ सम्बद्धि आस ता कर हु ग्वामा । वह न वृष्टि की स्वाहितासा के

77

तुम तुम देत घटा निर्ह, उभै हाथ अपस्य मीन्द्र। भीजा बीन्ड जमत महें, सो सब ता कर दीन्द्र ॥३॥

store

श्राप्त एक बरना मा गाजा आहिट्ट कन गाज जेडि ह्याजा में मता सरबरा सन उरहे । श्री नहें बहे राज तीड हुई में उपित श्रष्टन, निश्चित हाथा । उसर नाडि जो सरबित पाजा में रखन दात दाय सब तीया चाटिक के हिस सही जाया उज्जाद निनु सा नाय त्याद निकाल आज करे देह बस्ही में तहाड़ निनु सा नाय त्याद निकाल आज करे देह बस्ही में तहाड़ नाया गुन सुरम्माय तहा, नाय मबन दुख पासा म

सर्वनास्त्रकार अस्ति स्थापिक स



हिन्दी-पद्य-रत्नावली

३८ हीन्हेसि जग देखन कहूँ नैना। दीन्हेसि खबन सुनै कहूँ बैना ॥

दीन्हेंसि कंट योल जेढि माहां। डीन्हेमि कर-पहन बर वाहां है दीन्हेंसि चरन खन्प चलाई। सी पै मरम जानु जेहि नाहीं 🏻 जीवन मरम जान पै सूदा। मिलै न तरुनापा जग हुँदा 🏖 सन्य कर मरम न जाने राजा। दुखी जान जा कहें दुख याजा है

> मरम जान पै रोगी, भौगी रहै नियंत। सब कर मरम सो जाने, जो घट घट रह निन ॥ ७ ॥

बीपाई

अति अपार करता है करना। वरनि न कोफ पावै बरना है

साल सरग जो कागा करई। बरती साल सबुद सिम भरई।।

जॉबन जरा साल्या बन द्वाल्या। जॉबन केम रोम पवित्र पाखा ॥

जांवत सेंह रेंट दुनियाई। मैप यूँट की समन नगई 🏾 सय ठिम्बनी करि दिख समार । दिखि न जायेगुनसम् दश्रपास्य

एन कीन्ड सब गुन परगदा । बहि समुन्द्र त बहु न घटा ॥ 'स नानि सन गरंथ न*होई। गरंथ करें* सन थाँउर साई#

बड गुनवन गलाई बहै होय सो वेग ।

श्री श्रम गन संबारे, तो गन करें अनेग ॥ ८॥

(प्रकारतः)



हिन्दी-पश-रत्नात्रली

करिय

80

दृष्टि चक्कींथि गई देखत सुपरनगई, एक से सरस एक द्वारका के भीन हैं।

पृद्धे बित की इ का हु में। न करें बात, जहां देवता से बैठे सप साधि-साधि मौन हैं।।

देखन सुदामा धाय पुरजन गहें पाय. 'कुवा करि यही कहां कीनो वित्र गीन हैं ?'

धीरज अधीर के, हरन परपीर के बनाओ बाउधीर के महत्त्र यहां कीन हैं ?'४॥

द्वारपान चित्र नहें सर्वा जहां कृष्ण जदुराय । हाथ जरि हाहै। भया बोल्यो मीम नवाय ॥५॥ re Tor

र्मीम पंगान में गातन से प्रनुतान, के।च्याहि वसै किहि पामा रे

धीनी करी हा, करी दुपरी चक्र पाँव तपानर की नहि सामा ब द्वार खरूबी दिल तुर्वे । दक्षि रही। चरित्रमा वसूना अभिरामा । दीनद्रपार्का ४६ने नाम, वनामन आपुना नाम स्दामा ॥ध∎ नायन पुरि रह १४ मा पम्तुति स्थल हा दूध महार माच नया स्रायक र करपदम के दियं मौक सम्बन्धा । चींच इत्राहर भागमा वर्षा जात समाह रह समान्या। रात चरा नवटा तवटा भारत छता रमापति साहित सेट्या ४३९ पम विहार विशयन सा सय कटक जार उस पूनि जाये। हाय नहां तथ राया सहार त्य द्याय देते न क्लि दिन साय । राम्य मनामा का राज रमा अल्ला अल्ला अल्लाकर रेथि। या - साम ६ ता उद्यासार जैसन इ तर सायग धार्य। १८६



हिन्दी-पद्म-रत्नावसी

પ્રર

सबैधा

भींत भरे पकवान मिठाइन, लोग करें निधि हैं सुखमा के। सीभ्यक्तेरे विवा अभिजावन, 'जैवें क्यें हरि सग सभा के।। पात्रकार एक क्रीफ दुनिया मेर पावक' पासर लागे समा के।। प्रति की रीति कहा कटिए, विदि पैठें पक्षान कन रसाके॥१४५

शेश

मुडी दूसरी भरत हो शिक्तिनि पकरो बांद । ऐसी तुन्हें कहा भई सपति की धानपाह ॥१६॥ कही श्रीकिनिनी कार में, यह पी कीन मिनाप ! करत मुदामहि धाप मों, होन मुदामा आप ॥१८॥ ndtr

हाथ गद्रेम मनु को कमला कहैं, नाथ कहा नुनने चित नारी। तहुक खाय मुठी दुइ दीन कियो नुमने दुइ लांक-विहारी। स्वाय मुठी तिमरी ज्यय नाथ ' कहा नित्र वाम की जाम विमारी। रक्ति ज्यार समान कियो नुन चाहन जायदि होन भिखारी।।१८॥

> कक्षी विश्वकर्मा सो हरि 'तुम जाय करि नगरि सुदामाज का रची बेग अवही।

रतन-जटित धाम, सुबरनमई सब, कोट औं बजार बाग फ़लनके नबही ॥

कम्पपृत्त्व द्वार राज रथ श्रमवार ध्यादे कीजियो श्रपार दास दासी देव छवही ।

१. एक पाव ।



दिन्दी-पच-रन्तावधी श्रंतर दाव लगा रहै, धुश्रां न प्रगटै साय। कै जिय जाने आपनो, (कै) जा सिर बीवी हाँय।।आ कमला थिर न रहीम कहि, यह जानत शव केया। पुरुष पुरातन की बच्च, बयों न अंचला हीय ॥?९३.

88

कहि रहीम धन बढ़ि घटे, जाति घनिन की बात। घटे बड़े उनको कहा, धास बेंचि जो खात ॥१०॥ कहि रहीम संपति संग, यनत बहुत बहु शित । विपति-कमौटी जे कसे, साई साँचे मीत ॥११॥ कहु रहीम केतिक रही, केतिक गई थिहाय। माया ममता मोह परि, श्रंत चले पहिताय ॥१२॥ कडु रहीम कैसे निभै, यर केर की संग। ये डोलत रस आपने, उनके फाटत अंग ॥१३॥

कागद की सी पूनरा, सहजहि में घुरि जाय। रहिमन यह अचरत ठरों, मोऊ खीयत बाय' II-शा कैमें निवह निवल जन, करि सवलनि सा भैर। रहिमन वसि सागर विषे, करन मगर सो वैर ॥१५॥। खीरा सिर ने कादिए, मिश्रयन नमक लगाय। रहिमन करुए मुखन कें।, चहियत इहै सजाय॥१६॥ क्षेर, खून, खाँमी, खूमी, बेर, प्रीति, मदपान। रहिमन दावे ना दर्व, जानत सकल जहान॥१७॥ द्धिमा बडेन के। चाहिए, छाटेन के। उतपात। का रहीम हरि को घट्यो, जो भुगु मारी लात ॥१८॥

जब लगि बित्त न आपुने, तथ लगि मित्र न कीय। रहिमन अयुज अयु दिन, राव नाहिन हिन होय ॥१९॥ र बाण-वाय संघान स्थाप ।



दुरदिन परं रहीम कहि, भूलन सप पहिचानि। साथ नहीं विन-हानि कें।, जो न होय हित-हानि ॥३१॥ वोद रदिमन एक से, जौटों बोउत नाहिँ। जाति पान है काफ पिक, ऋतु यसत के माहिँ ॥३२॥ धन दारा श्रम सुरान मों, लगा रहे नित चित्त । क्यों रहीम स्थानत नहीं, गाड़े दिन की मित्त ॥१३॥ धनि रहीम जल पंक को, लगु लिय पियत अयाय। त्रत्य-बहाई कीन है. जगत पियासी जाय ॥३४॥ भूरि धरन जिन सीम थे, बहु रहीम केहि फाज। तेहि रत मृति पननी नरी, मी दृदन राजरात ॥३५॥ नाद रीजि. तम देत गुम, नर धन हेत समेत। न रहीय पम में अधिक, रीमेंड कहा न देन ॥३६॥ पावम दांग रणाम मन, काइल माध्या भीत ! असव नी तारह बाहिन्हें हमा प्रश्ति हीन।।३३॥ धानमा अधा करेल वर्णा, या वर्षा कहा समाय। बर बर राज्यां राज्या राज्या विकास नाम ॥३८॥ क राहर रामन र या र आसी । ना रहत व ११ हर कर रहा तस्यानि। १९ 4 175 र या न धार बाउ and the series are strained उत्पादन व ा अवशे दिन द्वारा Trans to the and a costa property

स्वयं कर ते तल सावान्त्रण संग्रातन । स्वयं स्वयं के क्षेत्रण स्वयं पर नाम अपिके स्वयं व्यवस्थात के तमा एते तम् स्वयं । राज्यं सुध्यं तथा व्यवस्था ।

हिन्दी-पद्य-रत्नावर्टी

85



हिन्दी-पद्य-रत्नावली 20

गहिमन नीचन संग्र विम, लगत कलंक न काहि। दूध कलारी कर गड़े, मद समुकी सब वाहि ॥५६॥ रहिमन पानी राखिए, वितु पानी मय सून । पानी गये न ऊवरें, मोती, मातुष, चून। १५॥ रहिमन ब्याह विद्याधि है, सकह ती जाह बचाय। पाँधन बेड़ी परत है, डोल बजाय-यजाय ६५८ रहिमन बहु भेषज करत, ब्याधि न छाँइत साथ। वान मृग बसन अरोग बन, हरि खनाम के नाथ ॥५९॥ रहिमन यात ज्ञान्य की, कहन मुनन की नाहिं। जे जानत ते कहत नहिं, कहत ते जानत नाहि ॥६०॥ रहिमन राज सराहिए, ससि सम सम्बद्द जो होय। कहा बापुरो भानु है. तच्यी तरैयन स्वाय ॥६१॥ रहिमन रिम के छाँदि कै करो गरीबी भेस। मीठो बोलो, ने चली, सब तुम्हारो हस १६२॥ रहिमन लाग भला करी, अग्नी-अगुन न जाय ! राग सनत प्रय पियत ह साथ सहच चरि खाय ॥६३॥ सहसन विद्या वृद्धि नहीं वरस जस हान । संपर जन्म हुयाँ बरैं, पस् । बनु पछ, वि<mark>षान ॥६४॥</mark> रहिमचन तर सर चुके व कट सागन आहिँ। इनत पार । व नर । वन तुर्गानकमाता साहि ।।६५% नम न ।। पन नय नीप्रत नवन माय।



हिन्दी-पध-रत्नावली

सोपरा

44:

रहिमन मोहिन सुहाय, अभी पियावन मान वित। जो विष देय बुलाय, प्रेमसहित मरिया भलो 🎏 (रहिमन के दोरें)

११---राज्य-श्री-निन्दा

चित्रावदासा—म० १६०≈—१६६**=**]

मजिहा सन्द

एक काल राम दैव, सोधु बंधु करत सेव। सोभिजें सबै सो और, मंत्रि मित्र ठौर-ठौर ॥ १॥

वानरेम युथनाय, लंकनाथ-वंधु साथ, सोभिजें सबै समीप, देमन्द्रम के महीप ।) २ ॥

> भोदा मरस स्वरूप विलोधि कै, उपजी मदनहि लाज। आइ ग्ये वाही समय 'केशव' एपि ऋपिराज ॥ ३॥ असिन, अत्रिः भूगुः अंगिमः कश्यपः कंशव ज्यास । विश्वामित्रः अगम्बयुतः बाल्मीकिः, दुवामः ॥ ४॥ वामदेव मुनि कार्वयुन भरद्वाज मनिनिष्ठ। पर्वनाडि है सकत मुनि श्रायं सहित वशिष्ट ॥ ५ ह

नगव्यक्तिमी छन्द सबच रामबन्द्रज्ञ उठे चिलोकि कै तबै

मभा समेन पा पर विशेष पूजियां सबै ।



हिन्दी-पद्य-रत्नावली

43 नोमर छंद

राम — सुनि ज्ञान मानसन्हंस, जप जोग जाग प्रशंम । जगमांक है दुख-जाल, सुख है कहां इहिकाल ॥ १२ तहँ राज है दुख-मूछ, सब पाप के। अनुकूछ।

श्रव ताहि लै ऋपिराय, कहि कौन नरकहि जाय ॥ १३ चौपाइं

सोदर मत्रिन के त चरित्र। इनके इस पै सुनि महास्त्र इनहीं लगे राज के काज। उनहीं ते सब होत अकात राज भार नर भैयनि द्या । इछ वछ छीनि सबै तिन हया जय लीग्हो सब राज विधारि। नल-इमयनी दियो निकारि राजा सुरथराज की गाथ। मोंपी सब मत्रिन के हाय सरात सुरापा-रीन विचारि। मत्रिन राजा दिया निकारि

राजन्श्री अनि यच्छ नातानार का सुनि लीजे बात यौक्त श्रम प्रिकिश रहा विनश्भी को न राज-श्री सर्ग शास्त्र सुजलहुँ र अवन नातः मालन होन व्यक्तिना**के ^{गात}** यद्यभि है अति इ.न.६ हाप्र । तहिष सुजति रागम की सृष्टि

महापुरुष सी असा धीत । हरति सी साम्य मास्त रीति प्रियम संशोधकतीन का बोल उन्द्राहर नहारिकी होति गुरुके बचन घसर अनुस्यास्तरात स्वतनको स्^{त्र} मैंतः बलितः नवं बसने गुड्या । सहत्व नहीं जल ज्या उपहेरी मिल्लन हुका मनो न वान । श्रीनशत्क व्यो उत्तर देवि पहिल सुनै न शार नुसल मानी कारणी ज्यो न सन्दि

१ — हरण ता वस का व्यथना कवित शाहर—सीमा।



मन-मूग के। सबधिक की गीति । विषय-वेछि के। वारिव-रीति ॥ मद-निशाबिका की भी अली। मोह-नींद की शब्या मही॥ आशीतिय दायित की दरी। गुग्नुन्मत पुरुषन-कारन छुरी। कल इमन का मेघावली। कपट-जल्य-कारी की थली।।

वाम काम-कृति की किथीं कोमल कदलि सुवैध्य । धीर-धम-द्वितरात्र की, मना गृह की रेख ॥१६॥

Beer

42

ुम्पन्समी ६स मीने रहे। यात वृताय एकन्द्री कहे॥ यस्थ-वर्ग पश्चिमी नहा। माना समियात है सही॥ सर्ग सब र र'न न बाधा इसा काठ व्यक्ति करि जन क्रोध ■ सन-विश्वस-तादन श्रानुगे परदार गमने धानुगे ॥ सूगया यह शुरना वर्ग दश पृथान बाप माँ पद्मी ॥ ना इर विनर्दे यह दया। यन इटरै ना वहीं वै सवा।। प्रमत तावा : व्यक्ति तात र'म वानै नो बड मतमान ।। स इन मा धवना करें सवन की मी पदवी रहें।।

1 21 नाइ व्यति 'हत का कहै भाई परम व्यक्तिय स्व-तकाई ततन्य सनन मधी सिव 🗥 आ

m? 116

दर्श दर्श रांग राइ सात तुम सद जानत ही श्राप्तात 🏾 रेमा (राष्ट्रमान मानियः तैसी राज्यका जातिये॥



९३ सेम,

सेम, महेंस, गनेस, दिनेस, सुरेसदु जाहि निरंतर गार्बे । जाहि अनादि, अनंत, अगंद, अहेद, अभेद, सुवेद बनार्बे॥ नारद से सुक व्यास स्टेंपचि हारे तक पुनि पार न पार्बे।

ताहि आहोर की छोहिरयाँ झाँछया मिरे झाँछ पै नाच नचार्ने 11611 पुरमरे आति सोमित स्वामजू तैसी धर्ना सिर सुन्दर चोटी। सन्दर सात फिर्ट ऑगना, पग पैजनी बाजतीं, पीरी कड़ोटी।

वा इदि का रसस्यानि विज्ञोकत वारन काम केलानिधि केटी । काग के भाग कहा कहिए इरिन्हाथ सें। लै गयो मारान रोटी क्ष्पी अ

द्रौपाट श्री गानिका गज गींग श्रजामिल सो कियो सा न निहारों । गौतम-गोहिंगी कैसे तरी, प्रहलाद का कैसे हरयों हुए आरी। कार्र को सोच कर रसायानि, कहा करिंदे रिव नंद! विचारों। कौत की सक परी है जु माझन-चालनहारों है रास्तहारों ॥5॥

(सुत्रात समझार)

१३–भक्त-भावना

[मनापति-सः १६४४-१३००]

महामोह क्विन में, जगत-जक्विन में, दिन दुख-क्विन में जात हैं विहास कै।

दिन दुख-ददिन में जान हैं विहास कै मुख के। न लेम हैं, कर्लम सब में।तिन की. मेनापित याही ने कहन अकुराय कै।

र मुद्रे ऋ पुत्र सन्।



११-सुंदर-विचार ४ [गुरुर-तः १६४३-१७४६]

कशित

काटू सों न रोप तोप, काटू सों न राग-देप, काटू सों न पेर भाव, काटू मों न पाव है। काटू सों न बरवाद, काटू सों नहीं विचाद, काटू सों न संग, नती काटू पण्यात है। काटू सों न दुष्ट बैन, काटू सों न लेन-देन,

प्रकार के विचार, कह सा से लगाया। प्रकार के विचार, कह और न सुहान है। पुन्दर कहन मोई ईमन का महाईम, सोई गुरुष्टेव जोड़े दूसरों न बान है। १॥

पांच शांप रहे रससाहि रूपपुत्र बाह, हव यय मातत, पुरत पहां रुक है। बापत पुनाह सप्ताह मित्र शा पुति सुनाहि काथर हो। पहां यान करा है।। लशकत बरशे जिस्सा हस्साहि बहै,

मारमार कान पत्न राउम्रहरी। एम तुझम प्यादार सन्दर समझ सेई. पर मार्टिनरमा स्वापन सफल है॥ २ ॥

.% तदका मनेही भीन विद्युप्त नते प्राप्त, मनि विनु चिटि नैसे जीवन न छट्टिये।

• स्वान्ति ये तान का रुत, ना पाकरात स विज्ञता-मुचना है ह



दिग्री-पच-रनापशी

नुक भंग, श्रंद-भंग, भाग्य मित्रै न कछु, सुंदर कतल ऐसी बाती नदीं कदिए ॥५६

्यांत देशा धन जाके, सूर्ति सो संसार-सूत्र, सूर्ति तैसा साम देखी, जन केमी यारी है।

बाव तैसी चनुवाई, स्माव तैसा सनमान, बबाई दिस्तुति तैसी, सामिनी सी नाम है है बन्ति नैसा स्टान्सक, विज्ञ वैसा दियिनोक,

बीर्गन कर्नक तैसी, सिद्धिमी उपाधि है। बायन न बाद बादी, वेशी मिन बस जादी, सन्दर्भ बदल नाडि बेदना इसारी है हैंदैन

अप्र अस्त्र में फाउक विकास के सामार्थीत

अस्त रिका है साह साल अस्तुहै। जा जामाज्य रिका क्षेत्रात वर्ग है आह

প্রনা জনত নাগেনাগে । এরপুটির লোকা গণে লাভনা ছবা সাই ছপু নতা নাজানা কা রচিত বাল্টিঃ

माना करता का राज्य का बारास वान् । करता का राज्य का प्राची सहसूत है का

£

हाल भाग का एक एक स्वास्त का नहीं है। कमा भाग जाता अन्य स्वास स्वास्त्र के कुला भाग वास्त्र स्वास स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र के स्वास्त्र स्वास्त्र

1 4



श्रथर धरत हरि के परन आठ दीठ पट जाति। हरे बांस की बांसुरी इन्द्र-घतुप सी हाति॥९॥ या अनुरागी चित्त की गांव समुक्ते नहिं के।य। क्यों ज्यों हुरी स्थाम रेंग, त्यों स्थां चझल होय ॥१०॥ कहा भयो जा मीछुरे, मी मन तो मन साथ। उदी जाति किनह गुदी, तक घडायक-हाय ॥ ११ ॥ कहळाते एकत बमत अहि-मयूर, मृग-बाध। जगत नवीयन सा किया शिरप दाप निदाय ! १२ ! रतित भुद्ग घंटावडी, मरत दान मधु मीर। मन्द-मन्न चावत चल्यां कंजर-कुज-समीर ॥ १३ ॥ दमह द्राज प्रजानि से। क्यों न बढ़े श्रति इंद। व्यक्ति भी रंगे जग करें मिलि मातम रवि चन्त्र ॥ १४ । कड़ें यहे सब काति सुम्रति, यह संयाते लोग । न स दबायन निस्क ही, पानक राजा, रोग ॥ १५॥ सबै हेंसद करतार है। नागरवा के नांव र स्यां स्थ्यं गरं सं भगंत्रम राजार गाँव ॥ १६ ॥ सावदी प्रकार के समाद्राप नामिन। रत राज्य न उपादय नट चौकन चित्तास रश् · क प्रमानवन्तर । र एके कार जाड़। 'त' नार' ह जा तता उचा हाइबार्ट में इ.स.च. सरस्य १५ व्याः गुनव के सूत्र। हैं बतुर बन्दर रहा इस डारिन वे फुळ !! १५ !! •रर^{*} स्तर^{*} रसीयुनी साउद्या श्राधिकायः। क साथ और न हैं, या पाये कीराय ॥ २०॥

...

का छुट्यो इदि जाल परि, कत सुरङ्ग श्रकुलात। ज्यों-ज्यों सुर्गित भज्यो चहुत,त्यों-त्यों उर्मत जात॥२१॥ कर लै सुँघि सराहि कै, रहे सबै गहि मौन। गन्धी, गन्ध गुळाव के गॅवई गाहक कौन ॥ २२ ॥ वैन यहां नागर बड़े, जिन श्रादर तो श्राव। फुल्यो श्रमफुल्यो भयो, गॅवर्र गाँव गुलाव ४ २३ ॥ जद्पि पुराने वक नड, सग्वर निपट कुचाल। नयं भये तो यह भया, ए मनहरन मराउ॥ २४॥ दिन दम छादर पाय के करिले छाप बग्यान। जीलीं काम सराध-पद्म, तीटाँ तो सनमान ॥ २५ ॥ मरन प्यास पिजरा परगे सवा समय के फेर। श्राहर दे-दे पालियत यायम पनि की बेर ॥ २६ ॥ चले जाह ह्याँ को करत हाथिन के व्योपार। नहि जानन, या पुर यसता धानी धौर कुन्हार ॥ २०॥ सर्व-सर्वे संदर सर्व, रूप-कुरूप न फोय। मन की रुचि जेती जिते, तिव तेती रुचि होय॥ २८॥ जगत जनायों जेहि संयल मी हरि जान्यों नाहि। इमें ध्वौरियन सब देशिये. छोगि न देखी जाति ॥ २५ ॥ जपमात्रा हापा विलय सर्वे न एकी बाम। मन बाँचें नाचे पृथा, साँचे राँचे राम # ३०। सौ स्ति या मन-सदन में हरि कार्व किहि बाट। विष्ठ जरे जी लिंग निषट गर्ने न षपट-प्रपाट ह ३१ ॥ यह बिरिया नहिं चौर बी, मू बरिया वह मोथि। पार्टन-साद पदाय जिन बीन्दे पार परोधि॥ ३३॥

£%

भजन कयो तासी भग्यो, मध्यो न एकी बार। हर भजन जासी कहों सी तू भज्यो गेंबार ॥ ३३ s

पतवारी-माला पकरि, और न जान छपाय। निर संमार-पयाथि कों, हरि-नामें करि नाव ॥ ३४ ॥ मुन, मोहन सों मोह करि, तू घनस्याम निहारि।

के त्रविहारी मा जिहरि, गिरिधारी उर धारि ॥ ३५ ॥ दीरप मांस न लेड दुग्त, सुन्य मार्ड नहि मुख।

दर्द-दर्द क्यो कार्त है, दर्द-दर मुक्द्यु ॥ ३६ ॥ नोकी उद्दे अमारुनी, फीकी परी गुहारि।

मनो नभ्या भारत थिरद, धारक बारन नारि ॥ ३० ॥

वंदिहें सुन रोमले, विमराई वह बानि। तुसर कान्ट भय सना व्याग-काव्यिक के वानि ॥ ३८ ॥

हव का रान रीम इ, हान न कृष्य महाय। नुसार राजा वर्ग स्टार वर्गनावक वर्गनाय 🛚 🕬 🖁 हाउ हाटिक संबंदे हाउ शब्द हतार।

मा सर्वति । रहाति अवः 'बपात्र बारनहार व ४० व या देहा या राज्या हा राग प्रवसी चाल।

हर न कर्म क्षेत्र केरदर के मा पारची स्वार ॥ वर ब तर, कार तुल्या हा बना बार हतार क राज मान दर रहा, तरा रहा दरवार । उन

हिन्दी-पद्य-रत्नावली

er eres in a ser our visitabile.

त्र रहे रें से से हर्राह्म आरित हैं।

सोटि नुग्हें बाही बटम, मेर जीते जहुराज। अदने-व्ययने दिग्ह की दृहुँन निवाहन लाग ॥४४॥

१६—इत्रपनि शियाजी [१५७—१८ १६७८—१९०६]

वित्त इन्द्र जिमि जंभ पर,बाहबसुणंश पर,

रावन गर्दम पर रघुनुगन्याज है। पान चारित्राह पर, संतु रित्ताह पर.

्यो सहस्रकार पर राम हिजराज है।। बादा हुमहंद पर, श्रीता मृग मृग्ह पर,

भूषत विद्वार पर जैसे समाप्त है। सेक सक्तांस पर, पार शिक्ष पंत पर, न्योगील्य न्यंशपरसेर सिवगतीर ॥ १ ॥

्द बाग समें १,७ टोस मेर् कुटल् सी,

रायात लगाइथे के दियों लाइक हैं। स्पष्टि के संयुक्त स्थितस्पाति के ब्यान याः स्थित का कथाने से स्थान जनकर्ताः

্ত সম্পূৰ্ম হয়েই আৰু গ্ৰেষণে বিজ্ঞান হৈছে। সম্পূৰ্ম এশ লগ্য এইবন্ধা অহুস্থান্ত হ'ব দিন লয়ৰ আৰু কুলাকুল সংযামন, কুলী আয়ুহাতেই অসম আহুমনায়ন বিহুত্ भूपन जहान हिन्दुआन के उनारिते कें।, े तुरकान मारिये के। बीर बज्जन है। माहिन सो लरिये की चरचा चलति आनि, मरजार के हमन बड़ाह इलकन है।। २॥

रानी हिन्दुबानी, हिन्दुबान के निल्क राग्यों, आमहित' पुरान रात्ये बेदिपिय सुनी में । साधी राजपूर्ती राजपानी राजपानी राजपानी स्वाम कर्त साधी राजपानी राजपानी राजपानी मुनी में । भूवन सुक्कि जीति हह सरहहून को से समझ कर्ता का सुनी में । साहि के सपूर्व निवस्त कार्यों का सुनी में राज हम सिराज सामसे नेरी. जिल्ली हुन दिवस कार्यों के सपूर्व निवस्त सामसे नेरी.

वद राज्य विदितः, पुरास राख्यं सारयुतः राभ नाम राज्या अपनि रावना सुपर में । तिन्दुत की चोटी, रोटी रास्त्री है सिपाहित की, कों से जनत राज्यों, साटा रास्त्री गर में ॥

मा' र रास्त्र पूरान, मरादि राग्ने पानमाह, देशी पीमि राज, बरवान राज्यों कर में । र पत्र की हह रामा नेमन्त्रा मिवरान, देव राम देवक, स्वाम राज्यों कर में ॥ ॥ ॥

कम जानी से उद्योग परता था, जिस्सी श्रेष्टक सम्झा है। परता का परिन्य सीता

e ible du, et E. a

स्याजि चतुरंग घीर-रंग में तुरंग चहि,
स्याजा सिवाजी जीन जीनन चलत है।
भूवन भनत नाद बिहद नगारन थे,
नदी मदमद गज्यरन के रूलन है।
ऐल-पैल खेल-पैल चलक में गल-नेल,
गाजन की हेल-पेल चैल इसकत है।
तारा सो मरिन पुरिन्धारा में लगत जिसे,
धान पर पारा पारावार यो हलत है। ५॥

चित्र कार्यन, प्रांगू कार्यन वेन, हेलि, बीबी बाँह बेन, मियाँ ! बारियत बार्टिने १ अपन जनत बाँगे, प्रांचे स्टब्स्स है

भूषत भागत खुने, आवे परशा में, वेषत बारवार खरों सेभार तन ला ते

सोनी ध्वारवान, प्रशीनी जायी हेट्ट सब, दीनी असी रूप न सिनीत बागे दात्ति, विकारी पीर्थक मानि गये हो स्थाय, तुन्हे

विकारी बीरवंब मानि सर्व हो स्वताः, तुन्हे ज्ञानियतः विकास के स्था १ व हो स्वताः स्वतः

भाग विविधानमार्ग सावसार (विविधान कर्मानो आप र गर्ने हर अर बीनो आप र ग्रेंटर सर्वको हर विविधास सेवो विविधास स्मानही सर

ित्र कार्र दिस्तात कारण्या एका साथ हो, इ सामक कर्तार्थ, उपराण चेंग्या कार्यो कार्याण्य

्रशास्त्रम् अभिकृति । स्टब्स ४५ अस्ति हिन्द

9 44 414 4 4 4 5 5 7 7 1

६८ हिन्दी-पद्म-रस्रावती दुख्हो सिवामी मयो त्रिद्धनी दमामैवारे

दुरहों सिवाजी सथा वश्चिती हमासवार दिली दुलटिनि भई सहर सिवारे की ॥ ७ ॥

इन्द्र निज हरनिष्ठत यज्ञ-इन्द्र चरु इन्द्र को अनुज हरे हुग्धि-नदीस के।

भूपन भनत सुरमारता का हंस हैरे, विवि हरे हंस के, घकोर रजनीम का ॥ साहि नर्ने स्वियन, करनी करी है में जु,

होत है कर्यमा देव केटियो तेंगीस के। पायत न हर तेरे जम में हिराने नित्र, गिरि के गिर्धम हेरे, गिरिजा गिरीस के। # 201

्धः जसन कराज या जल्ला गाठि बैठो जीऽयः, उन्द्र व्यार्थः, साथ जागे व्योग्गः को बगजा।

संघन सनेत तहा धारता सित्राजी साती, 'तन हा दुवर दक्षि नकह से लस्ता ॥

६०५ - स. म. म. २४ - साहि हा इन्हाम म् ४म के संस्थाराष्ट्रासक कवा ब्रह्मा ।

राम है। व'र मा उर्व न दिश्व १९८५ - १९६५ टरन आयो सरआ।।*॥

कर राज्य राज्य कर या वह शहर सम्बद्ध सामान्य स्थान का नामान्य कर का क्षेत्र राज्य सम्बद्ध सामान्य



150 हिन्दी-पद्य ररनावली पंजन पेलि मिलक्ष मनयो सब सोई बच्यौ जेहि दीन है माल्यो सौ रंग है सिवराज बठा, जेहि नौरंग में रंगएक नरास्यी ॥१४

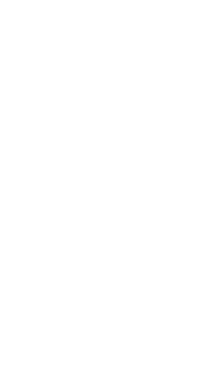
यों कवि भूपन भाषत है, इक तौ पहिले कलि ठाल की सैडी ता पर हिंदुन की सब राइन नौरंग साह फरी धारी मैटी साहि-तनै मित्र के हर सों तुरही गहि बारिधि की गति पैली बेद-पुरानन की चरचा, अरचा दिज देवन की फिरि फैसी ॥१५

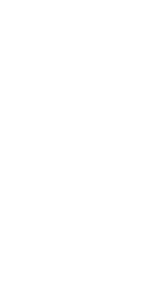
दीन दयाल, दुनी-प्रतिपालक, जे करता निरम्लेग्ख मही 🤻 भूपन भूपर उद्धरियों मुने खोर जिते गन ते सबजी है यो कलि में खबतार लियों, तह नेई मुभाय सिवाजी बली है

आय धर्यो हिन ने नर रूप, पै काल करें सितारे हिन हो के हरें तो पर मो दिनि छ। बन दान है दानहुमा प्रति नो कर छाते तें ही सुनी की बड़ाई सज़ै अब तेरी बड़ाई सुनी सब साजै भूपन ताहि सी राज विराजन, राज सी तृ सिवराज विराजे ती बन भी गढ़ कोट गर्न अर नु गढ़ काटन के बल गाउँ ॥१५

एक कहें कनपड़म है इसि पुरत है सब की चित चाहै एक कहै अबतार सनीज की. यो तन से अति सुन्द्रता है

नुषन एक करें माह इन्दु था, राज विशासन बाह्यी। महा दे एक कहें नासित है समार एक कहें नरसिंह सिवा है ॥१८







48

चक्रविति के बिन्ह सब, श्रंगत-श्रंगन रासि। छत्र-धर्म जन जीतरपी, सामुद्रिक दे सालि॥३॥ बीपार्ट

जनायी पुत्र उठी यह बानी। धन्य परी सब हो बह माती। दुन्दुमि बनै होक सुरवानो। धाठो दिसा प्रसम दिरानी। काठो दिसा प्रसम दिरानी। काठो दिसा प्रसम दिरानी। कातम्बर्ध करें के स्थानी भी स्वीति हो। होंगि भरे नसानी मार्चि। पिता हुरेंग नम हेग छुटवी अतक्षि-बहन नची बर बानी। भिरुकुक-भीन हरवानी राती। कीराति नची जनन मनभाई। जिसह जीस्ट्रमी द्विविद्ध हर्ष है दिस्थी हुठी में सम्ब मचाई। जिसह जीस्ट्रमी द्विविद्ध हर्ष है दिस्थी हुठी से सम्ब मचाई। जिसह जीस्ट्रमी द्विविद्ध हर्ष है स्थानी

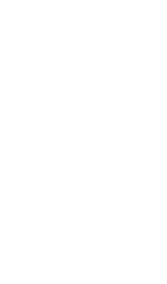
शेश

ईम संस्थत धानुरूप बार खरववन - परिनाम । जनमन्पत्र नाने जिल्ली, क्षत्रमाळ बहु नाम ॥ ४ ॥ व्यवस

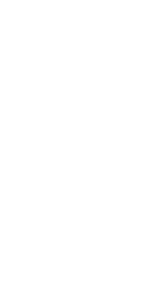
सामुद्धिः ३३ 'क्या है, जिसके द्वारा श्राणी पर के जिस्ही !











नेह्य सृष गुरु तिय प्रसन्न, मध्य भाग जग माहि । है बिनास छति निकट तें, दूर रहे फछ नाहिँ गंदेश भल-पुरं सब एकसे जौहीं बोहन नाहि। जानि परत हैं काफ-पिक ऋतु बनंत के माहि ।%। **बुरं छनत सिम्म**ं के बचन, हिये विचारी छाप। करूपी भेपत दिन पिये मिट्ट न तन की नाप 💵 🕊 नयना देत बताय सब हिय को हेत खहेत। जैसे निर्मेट धारमी भटी-सुरी कहि देन ॥६॥ फेरिन हेर्ट फपट मों जो की जै व्यीपार। जैसे होंड़ी काठ की घढ़ति न तूजी बार ॥७॥ श्रोहे नर की श्रीनि की दीनी रीति बनाय। जैसे छीलर, नाल जल पटत-पटत घटि जाय ।'८।। विद्या धन उदाम विना कहाँ जु पाँव कीन । विद्या कुळावे ना मिडी प्या पेरम की पीट 1850 रों समीप घड़ेन के होन घड़ा हित मेर । सद ही जानत घरत है हुए बराबर धेन ॥ ६०॥ पिसन-छुन्यो नर सुजनको परन दिसास न पुषि । ैसे साची हुए मा पीयत छात्रति परिवास्था करे पुराई सन्द्र परि, पैते पाँ पोहा र्रोप विरया स्माप को लाम यहा है होई हुन्छ। काद कह नियम के कीटिनीसून है। होदा शालाम दिन की करें, तीर दौर की होय 11:1 चरत बरत धन्यासरे। राह्यवि होत स्टान दर्भ राष्ट्रा- लाद में नित्र पर परा रिसान १४१४



वृन्द् की मृक्तियाँ

. ८३

दीवो ऋवसर को भलो जामों सुधरै काम। खेती-सूखे वरसियो घन को कीने काम ॥२७॥ श्रपनी पहुँच विचारि के करनव करिए दौर। नेतं पाँव पमारिये जेती लॉबी सौर॥२८॥ कैसे निवह निवह जन करि सवहन मों गैर। जैसे यसि सागर विषे करन मगर सों बैर ॥२९॥ जोही ते बछु पाइये करिये ताकी क्राम। रीत सरवर प गयं कैमें बुभति पियास ॥३०॥ श्चति परचे ते होत है अरुचि श्रनादर भाय। मलयागिरि की भीलनी चंदन देव जराय ॥३१॥ रस अन्दम समुभीन कछ पढ़े प्रेम की गाथ। बीछ मंत्र न जानहीं सौंप पिटारे हाथ॥३२॥ जो पार्व छति उच पद ताको पतन निदान। व्यों तिप-तिप मध्यान्ह त्यों धस्त होत है भान ॥३३॥ बहुत निवल मिलि बल करें करें जु चाहें सीय। तिनवन की उसरी करी, करी निवंधन होय ॥३१॥ कारज धीरे हीन हैं, काहे होतु श्रधीर ? समय पाय नमवर पति, केतक सीची नीर ॥ १५॥ जे चेतन से क्यों तर्जे जाको जासी मोह। नंबक के बीछे लच्या फिरत खर्चतन लोह ॥३६॥ गुरस्य गुन समगे नहीं तीन गुनी में चुका। कता पट्यो रिन को विभी, देखें जो न उत्के । ३०॥ जुबा धेले होतु है सुग्य संपति को साम। राज बाज नल ने एउयो, पांडव विय धनदास १३८१ १ राषी

विश्वत-वीरण्डण असे आयो प्रीतम गेह ।
नीमें आवन भाग ने खाग लगे पर मेह वहीं १
कानु काहि नीच न देहिण, अस्त्री न वाहि संग ।
वासर आं बीण में बहुदि विमार्ग आह बहुरआगिन परी गुन गहिन धान आपहि है मुस्ति जाम १९१६
आगिन परी गुन गहिन धान आपहि है मुस्ति जाम १९१६
आगिन परी गुन गहिन धान आपहि है मुस्ति जाम १९१६
आगिन परी में पाद में बीने सेन समान १९४०
वचन गमन कानुकन के कहे न दिन ठहरायों।
वाद गप्यापन कहा यह शिक्तिन होति होता वाद।
सार भाग पान वह दे स्वार तारी सामान १९४०
सार भाग पान वह विमार तारी सामान १९४०

राषाट + ५६८ वर्ष वाचा वाहे स्वय हाका ''' १ का ११० वर्षा हाह बंदीरी (१४० प्रस्थानका

-१ -सि हान्त मार

्र विश्व भी भी प्रदेश

, 4











हिन्दी-पदा-रस्तावली

विना विधारे जो करें सा पाछे पश्चिताय । काज विसार आपना, जग में होति हैंसाय ॥ जग में हाति हैंसाय, चित्त में चैन न पारे। व्यान पान सनमान राग रंग मनहिं न भावै॥ कह गिरिधर कविराय दुःग कछु दरत न टारे । सदक्त है जिय मादि, किया जा जिला विचारे है १२ है

२३-गंगा-ग्र्गा-गान

[प्याराम्मां । १०१० / १६०]

कुरम पे काट, काउट पे रोप-बंडली है, बुंदरी ये कवी कैन सुकन हजार की। कड़े पत्रमाकर त्यों कत वे कवा है समि. माम पे कर्या है थिति रजत-पहार की।।

उज्जन-पहार पर सन् सुरनायक हैं, सन् पर नानि जहा-जुट है व्यपार की। ताति जटा-दटन वे घर की छटी है छटा,

चर की छरात ये छना है एम बार को ब रे ॥

देशन समाध्य ६९ अ६८ दशन हता. 'स चवता या शेह नहह व शिक्षी। बढ़े पडमाच्य ५५३ ता पीरए ती, न्याद क्षत्र नामा च रत्य गाँव जातिही ह











हिन्दी-पद्म-स्लावली

88

बॉप जटा-कुट बेठि परवत कुट मार्टि, महा काउन्टर कही कैसे के ठहरतो ? पोटे नित भंगे, रहे बेतन के संगे गैसे पुरुतो हो नंती जो न गंगी सोस घरतो॥ १०॥

25

सुधं भयं ते हैं नर गंगा के अन्तर्दे को अध्या बहनामी भामी कैथक करोर हैं। कहे परमाधर त्यों किन की अवाहन के साथ रहे जोर सुरक्षिकन में मेर हैं।। बार-ना हाहसी हमाये करें पर-पाट, वाट हेरें नीर में कियी नन बोर हैं। एक जोर गर-, मुस्स एक और जाहें, पर जोर गर-, मुस्स एक और जाहें के स्वीधं

بو.

यागान आसम्, विद्यास में, संघातायो । रागा स, सम् में न नका जिससपूर्य । इन्हें पत्रनाकर पुरास पुत्य, रीरव से , होत्ते स केंग्राक्षीत सैलन से साइवें स

बारनमः, सन्युमे, बिथामे वसवारनमे, विषयम सन्वर्भे वहा-बहा बाह्ये ।

क्रमान स्वान काच्याते के लिय, उसके सरत समय, विष्णु^क सक्द, जबान दर, शिंग न नहीं और १-६न विदान भना, संयेक देवलें क्लो अपने नेश म स्वान आहता है?











हिन्दी-पच-रत्मावजी

(धोती)

80

पूरे मेरे घोषिया, तोमी भाषन हैरि। ऐसी धोनी घोष है, मैलो होय न फरि 8 मैलो होय न फरि, चीर यहिनीर न चारी। मायुन लाउ विचारि मेल जाने छुटि जाने। बनने दीनस्थाल, रग चडिटे चहुँ करे। जो न देहे घोष, भले जल कतल हो। 1828

(本年年)

दाग है है कत कीस चचरंक तुम मार्ति। याको नीके गरिया हुस्तित कीतिय नार्ति व दुस्ति कीतिय नाहि ,दीतिय रम घरि आगे । मध्य शबरे हेत मद्दे इत मीरक खागे। बाने दोनद्याल प्रेम को पेडा त्यारो। बाहत के पो मिलिट हाल के बेटालिहारी।

को दर्भ ।

नंद केंद्र राखन तुन्नमें प्रमाकारक्षाल सर्वेदरा के त्रस्य समान क्षतमे का



१०० हिन्दी-पद्य-समावली

कै करिके कर बहु भीय को टेरत नित दिग सीहरूँ। कै पूजन को उपचार ले चलति मिलन मन मोहरूँ।

के पिय-पर उपमान जानि पहि निज्ञ उर भागा। के मुख करि यह भंगन मिसि श्रम्तुति उचागा।

के प्रज तिय-गन-पर्यन-कमल की महरकत मार्ड । के प्रज-हरि-पद-परस-हत कमला रह आई । के मानिक अरु अनुराग दोड प्रज-मंडल बगरे दिरत ।

क नातिक अरु अनुराग दाउ झजन्मडल बगर रिस्त । क जाति लग्छमी-भीत एदि करि सतथानिजजज्ञ घरत ॥१॥

ेंद्र तिन पे जेढि द्विन चर-नोति राज्ञा-निश्चि पावति । जब्द में मिनि कैनभ प्रवती हो तान तनावति ॥ होन मुक्तमय मधैनवै उज्जल द्वरु स्रोमा। नव मन नेन दुसल होरि सदद सो मोमा॥

होत मुकुरमय सपै नवै उपजल दुरु स्त्रोसा। नन मन नेन पुणल देखि सुदर मो सोसा। सो को कि ना स्त्रीय कि सपै नास्त्र जमुता नीर्स्स ? आणि स्नति स्त्रीर प्रस्था रहत एवि दुरुसी नम् नीर्स्सीर्थी

. ५६ सन १,६ धनावस्य स्टू जन मृद्धि चमकायाः। ६. ४८५ सट स्थल क्ष्युट्टे सोइ मन सामाः॥

्रा हर गर्ड सम्भ क्या साइ मन साना। च्राहेरेल स्टाहर असन हुद्धारी च्राहर अस्ति छोत्र छोत्र। ॥

कार संस्तेत का विद्वार आशासाल विद्वारत है। बीट उत्तर के कार्य का प्रतापन ल्यान है। १५० कबहुँ होत सत्तचंद, कवहुँ प्रगटत दुरि भाजत।
पत्रन गत्रन यस विम्बह्म जल में बहु साजत।।
मनु सिस भरि खनुराग जमुन जल लोटत डोलै।
के तरंग की डोर हिँहोरन करित कलोलें॥
के बाल गुड़ी नम में उड़ी, सोहति इत-उत धावती।
के श्रवगाहत डोलत कोऊ ज्ञज-रमनी जल श्रावती।।६॥

1

मतु जुग पच्छ प्रतच्छ होत मिटि जात जमुन जल। कै तारागन ठगन छक्त प्रगटत सिल खिवकल॥ कै कालिन्दी-नीर तरंग जिती उपजावत। नितनोंहा धरि रूप मिटन-हित तासों धावत॥ कै बहुत रजत चकई चलति, कै फुहार-जल उच्छरत। कै निमिपति-मल्ल खनेक विधि, चटि,बैठन,कमरत करत॥॥॥

3.

कृतत कहुँ कल हंस, कहं मन्त्रत पारावत। कहुँ कारंडव उड़त, कहं जल कुक्कुट धावत॥ चक्रवाक कहुँ चसत, कहं चक ध्यान लगावत। सुक पिक जल कहुँ पियत, कहं श्रमगावलि गावत॥

कहुँ तट पर नाचत मोर घट्ट, रोर विविध पञ्छी करत। जलपान न्हान करि सुख-भरे तट-सोभा सब जिय धरत॥८॥

. 42

कहूं याछका विमरू सकरू कोमरू बहु छाई। उध्यक्ष भरूकत रजत सिदीमनु मन्स सुहाई॥ वियके व्यागमन्देत पाँवड़े मन्हुँ विद्याये। रजनशासि करि पूर फूट पे मनु वगराये॥ *।हन्दा-पद्य-स्*लावला

मनु मुक्त मौंग सोभित-भरी स्थाम नीर विदुरन परिता सतगुन झायो के तीर में झज निवास छिल हिए हरसि । ११ (चन्द्रावची मारिका)

(२)समशान

सोहा सोई मध्य, सोई उदर, सोई कर पद दीय। भयो जाज कछ औरही परसत जेहि नहिं कोय " हाइ. मांस. लाहा. रकत, बमा, तुचा सब सीय।

क्रिन्न-भिन्न दुरगधमय मरे मनुष के हाँय हरा। शेषाई

इल बानडू जिस स सम्हारे । तिस पे बीक काठ बहु हारे। सर पाता जिनको निर्दर्श करन कपाल किया निर्मे केरी ! इतः नमस्य ४८ १४७ तः वामन द्वीति सिवारे॥

ण - र कार महोव हारत आसुकाक नेहि भीजविचारत **।** न जा राज निर्म न्यान नामाय नामाय सम्बद्धाः समान हिमाये। रायात प्रजा नर्जावन् दारा मन काल सब एकहि लेखा eer कृत्य अमृत दिवसान : आजु सर्वे इक भाव विकान ! रह द्योगच आक्र अब नाही। रह नाम हो प्रस्थन माही । स

नान साइ पर ११३न ३६८ हाए स्वास्त हाव लक्षी है।

उपादन मध कहाँ है।

मय-भरी नर खोपरी सो सिस को नव विषह धाइ गहाँ है। है विल जीव पस् यह मत्त है काल-कपालिक नाचि रहाो है।।३॥

عي

सूरज धूम विना को चिता, सोइ व्यंत में लें जल माहिं बहाई। बॉर्ले घने तर बैठि बिहंगम, रोवत सो मतु लोग छुगाई॥ धूम कॅप्यार, कपाल निसाकर, हाड़ नछत्र, टहसी टछाई। क्रानंद हेतु निसाचर के यह काल मसान सी सोम, बनाई॥॥॥

हुच्च्य

रुष्या चहुँ दिसि ररत, हरत मुतिकै नर-नारी । पटफटाय दोड पंच च्छकहु रटत पुकारी ॥ श्रंथकार-यस गिरत काक श्ररू चील्ह करत रस । गिद्ध, गरुड,हड़गिल्छ भजत छीत निकट सयद दत्र॥ रोवत सियार, गरजत नदी, न्यान मूर्कि हरपावर्ड । सँग दाहुर-मीगुर-स्टन-धुनि मिलि स्वर तुमुछ मचावर्ड ॥५॥

(सत्य हरिश्चन्द्र नाटक)

(३) त्रेम-प्रलाप

पर्

श्रहो हिर, यस, श्रय बहुत मई। श्रपमा दिनि विडोकि करनानिधि कोर्ज नाहि नई॥ जो हमरे दोपन को देखी, ती न निवाह हमारे। करि के नुस्त श्रजमिल, गज को हमरे करम विमारो॥ हिन्दी-पश-रत्नावती

त्रव निर्दे सही जानिकोठ विधि, धीर सकत निर्दे पार्र हरीयंत्र को वैशि भाइकी भुज भरि लेंद्र छवारी। . 2

पियारे, याको नांव नियात ? तो तोदि भने तादि गदि भननो कीनो भनो बनाव॥ विन कड़ किये जानि अपनी जन दुनी दुख सेहि देनी। भन्दी मई यह रीति चलाई, उन्तरी अवसून लेनी !! हर्मचन यह भने निवर्ध हैरे अंतरजामी। बारम ख़ाँव छाँ दि के दारी बनाना यम का स्तामी त र

समारत चयन का स्वर्ग सर्वा । मार मुक्ट मिर पार ४च और अगह घटक संत्रारी ॥ दिव हेनेकल बनमार , वर मुरदा नाह उतारी। बकारिकत व्यात र १००१ रहन स्थान निवासी छ ाप्ति वर क्या । १ १व स्थावन इस्ट्र तयाची १ ्या पर पर हा हर हो। इ. ते हैं ... प्रमाण है त्म मान प्राप्त । ११३ का महागढ़ । जाति । and their old with the same of the

17 M . . HEH .

रत तेनत सहरहरस । १९त क्य भावे कायु ॥ र जनमन न राम रह नाइन वह जन स्था साचै र

and the second section of the second sections of the second







भूलें इमही तुमका, तुमनी हमरी सुधि नाहि विसारे ही। चपकारत के। कछु श्रत नहीं, द्विनहीं द्विन जा विस्तारे ही ह महराज । महा महिमा तुन्हरी समुक्ते थिरले बुविवारे ही। नुम शान्ति-निकेतन प्रेमनिधे । मत-मंदिर के चतियार ही ॥ यदि जीवन के तुम जीवन हो. इन प्रानन के तुम प्यार हो। तुमसो प्रमु पाय प्रनापहरी किकिट के अब और महारे ही।। २।।

(३) बुद्रावा

हाय बुदापा तोरं सारं अब नी हम नकन्याय गयन। करन बरन कुछ बनने नाही, कहा जान श्री कैस करन ॥ द्भिन सरि चटक द्विने मा महिम जम मुगानस्यन होय विया। नैस निराजमा दास पान ह हमारी अक्टिके उराहन ॥ १ ॥ सम कुठ करा रात ? ति वानी विदिया बानी वात

किया मृत्य हा नाई। चार्यान महत्र काह न ? मारन ॥ कहा बही हुए भन्तर हुए । भन्ताः का है यह हाल। करक दोन का बान न समूर्त नाने बीसन दोष कहन हरिश कारा भाक पाक मार्गमा यो एक साच मूर्ग ध्रम पोपलान । दोरकः पर बर्चन चाबा र स्था नवास्त्र ना पहन्त ।

बार काका एक अवस्ति एक मान बारन अस ह या राहक हुउन न चापन करन ह चारा पुरवक्तानने ॥ वैस वनः रहत्त्रवः र पूर्व स्थल स्थलस् वर्गनन-वाजित्ते हैं। राज हा है है रह है भन भा भाग महारत विस्त्रहरूम है

जियत रहें महराज सदा जा हम ऐत्यन का पालति हैं। नाहीं तो श्रव कोधीं पूछे केहि के कीने काम के इन ॥ ४॥

(३) फुटकर पद

साधो, मनुवा श्रज्ञव दिवाना ।

भाया मोह जनम के ठितया, तिन के रूप छुभाना ॥
इंड परपंच फरत जन धृतत, दुख कों मुख किर माना।
किकिर तहां की तिनक नहीं है, खंत समय जह जाना।।
मुखते घरम-धरम गोहरावन, करम फरत मन-भाना।
जा साहच घट-घट की जाने, तेहि ते करत दहाना॥
नेहि ते पृद्धत मारग घर को खापिह जीन मुलाना।
'हियां कहां सजन कर बाता, हाय न इतनी जाना॥
यहि मनुवा के पाछे चिड के मुख का कहां ठिकाना।
जो परताप राम के। चीन्हें नाहे परम स्थाना। १॥

. 4

जागी भाई, जागी रात खब थीरी

काल-चोर नीट् करन चहन है जावन-धन की चोरी ॥
श्रीसर चूके (कि पिट्तिहाँ हाथ मीजि निर फेरी।
फाम करा, निह काम न नेहीं वार्त केरी-केरी।
जा कहु वीर्ता बीत चुकी सा चिता है हुए नेहा।
ध्रागे जामे बने सा कीई, कि तनमन हुए टोरी।
फोड का पा ना नीटे साथ। सत दिला सुट गोरी।
ध्रापे करम ध्रापन सना, जीट मोडना मोरी।

सत्य सहायक म्बामि सुश्रद में लेंहु प्रीति जिय जारी। ' नाहि वी फिर परताप हरी कीज बात न पूडिहि तीरी है है है

२७-रंक-रोदन

, [नायुराम शकर शमी—राज्य १६१६—नर्नमान] बया शंकर प्रतिकृत काल का श्रंत न होगा ? क्या मंगल से मेल मृत्युपर्यन्त ने होगा ? क्या अनुभूत दरित-दुत्स अव दूर न होगा ? क्या नाहक दुर्वेव-कोप कर्पुर न होगा? १ व होकर सालामाल पिता से साम किया था। बैंने उनके साथ न घर का काम किया था व विदा का भरपूर चटल चम्यास किया या। पर औरों की माँति त कुछ भी पास किया या ॥ २ ॥ उद्यम की दिनगत कमान चढ़ी रहती थी। यश के शिर पर वर्ण चपाधि मदी रहती थी।। रान मान की स्थाति अध्यक्ष जमी रहती थी। भाषमंगों की भीड महैव लगी रहती या ॥ ३॥ नीवन का फछ प्रस्य पिताली पाय चुके थे। हर पूर सब काम कुलीन कहाय नुके थे॥ सदर स्वरा समान (उलास विसाद वृद्धे थे) उस सव उनका अन असता निक्षर चुके थे॥४५

र- १९२ पदा का जीते नवार साहच र अञ्चास चित्रती प्रवेष के अञ्चीत की जान दशकातीत , यह दिखा विषये

बौँघबाप की पाग बना मुखिया यर का मैं। केवल परमाधार रहा कुनवे भर का मैं॥ सुख में पहिली भौंति निरंकुरा रहना था मैं। क्या करता है कौन, न हुद्ध भी पहता या मैं ॥ ५ ॥ . जिनका संचित कोश खिलाया-खाया मैंने। करके उनकी होड़ न द्रव्य कमाया मैंने॥ खट रहे थे छोग, न द्वर पहचाना मैंने। ्रपाटे का परिलाम कठार न जाना मैंने व ६॥ विगर्ड चोकर चोरे पुरानिः वोर्न विगाशी। दिया दिवासा कार्, बनी ट्कान विगाई। 1 श्रावे दाम चुकाय बंदों की यात विगादी। · सुक्त से किया तिगाड़, न अपनी घान विगाड़ी 🕻 ७ 🛭 थद्के डिगरीदार, किसी ने दाम न छोडे। छीन छिये धन-धान-प्राम, ऋाराम न छोड़े॥ हाय ! किसी के पाम विभूपण-बख न छोड़े। नाम रहा निरुपाधि, पुटिसे ने राख न होड़े । ८ । न्यायात्रय में जाय दुख्यि कहाय चुका हैं। मव देकर 'इनसालवेंट'' पद पाय चुका है ह अपने पर की आप विभृति उद्भय सकी हैं। सर्वनाश से हाय न पिट छुड़ाय चुका है । ९ । चंद्र रहे मुख मोड़ पुराने आनेबाडे। लैंते नहीं प्रशास एट कर सानेवारे 🛭 देने हैं दुर्बाट बडाई करनेशांग लड़ने हैं बिन बार नाई पा मानेको । १०५

दिस्तियः क्षत्रकारमः)

विन्दी पग-समावती

करिना वेगों लंगा वा व्यव परकारि कहते हैं। हा 'न ध्रित विकास-साम का बी कहते हैं। पर्मार्थिय भीर नहीं सुरक्षन कहते हैं।

प्ताहितर भीर गर्दी गुरुत्तम् कहरे हैं। मुक्त का क्षेत्र कागाल भना-निर्मेश कहरे हैं। बैल बिला कि यात विरंद विषयीन कुछा है।

मन वस तर्यक्र महा संवर्भात हुआ है। क्रमानी का मार वहाँ, रम संव हुआ है।

करावा की मार पड़ी, रूस अंग हुआ है। तीरन का मगडाय विभाग तेमी हुमा है ६९२ ई रिक्स का वास्त्रात प्रचेष उनोड़ मुखा है।

न्या का पात्राच प्रणेष उत्तीव नुवाही। न्यान का प्रपत्तान प्रशास प्रदान गुनाही। १९५ का १ नाच निक्सम भाव गुनाही।

र्वे प्रतास निर्माण क्षा के है। इ.स.च. स्थाद निर्माण स्थाद है। इ.स.च.च्या स्थाप के नहीं है।

्रिके पर जाता स्थानम् सामग्री है। १८ वर्षः सामग्रीका सामग्री है। १८ वर्षः सामग्रीका सामग्रीका

to the second of the second of

. .







188 हिन्दी-पद्य-रत्नावली राम सभाको, सेताबी, गावी में भी गति पाती है। रलाया की लोलुपता सबके। अपनी चाह सिखाती 🐉

(शालगढ) अस्य प्रकृति के छोगो। पर मेरा विद्यार अब जाता है। जहां मिथु-उर-श्रालिंगित 'हालैगढ' दश छवि छाता है ॥ थीमी बहुनी नहर, तराइ पील पुष्पी से छाई। विलो' में इसे व तार, पालनार्गमिन ' तांवा की सुधराई व ^{ह है} नरी मोड स दाट. खतवुन नृतल रूप शीभाधारी । सृष्टि एक नृतनः जा उस्स सन्तरणांकने उद्वारी !! या जब वाँ की सूमि निरनर अल्-।वरव जो सहती हैं। नार बार लोगों की ध्यमकी छोड़ ह्यानी बहुती है व । ाराम की तड प्रकृति सभी उरम प्रश्चिमेश स करती हैं। न्यम संपिर इत्य-गभ की श्राभ नाया जन बस्ती हैं। ाक्षत्रमा प्रतिस्था वर्षः सामा क्षत्रमान्तुः स्थाना है। न्त-वना का भी कट-विकय ए काद्यासाता है। ८ ^व भवनका नगहन उस नार सरवाता मारी है पन तम अब है की धनहरू से के सौरी है।।

कर-कर त्रिय बर्ताव परस्पर प्रसन्नता सब पाते हैं। जैसे सुखित दोखते वैसे सचमुच ही हो जाते हैं। ४। किन्तु मृदुल गुणमय कौराल यह सुखद उन्हें यदि होता है।

उनके उरके मध्य मूर्यता का अंबुर भी बोता है।

क्योंकि प्रशंशाकी इच्छा जब श्रधिक प्रबल हो जाती है।

मन्द्य के भीतरी विचारों में निर्यस्ता छाता है । ५ ६







हिन्दी-पद्य-रत्नावळी 577

रसमय अपनीं से नाय ! जा सर्वदा ही मम-सदन बहाता स्वर्ग-मंदाकिनी था।

श्रुति पुट टपकाना सुँद जो था सुधा की, बह नव स्वेनि न्यारी संजुता की वहां है ? । १

म्बकुल-जलज का है जा समुन्तुःहरारी। मम परम निराशान्त्रामिनी का विनाशो।

वत्र-जन-विद्यां के युन्द का मोद-दाता, वह दिनकर-शामी राम-धाता कहां है ?॥ "

मुख पर जिलके है मौग्यता रोजनी सी,

चनुषम जिसका है शीज सीजन्य भारी। परन्दम्ब रूप्य के है जा समुद्रियन होता,

वह सरत्यने का स्वरद्ध गाता कहा है ? ॥ ६

ह विधिय विराणा का सभादील जो था। नित्र सुखद्ति संहै जो उसे ध्वसकारी।

थ्यकः रिसमे हैं कॉमर्जन्तरम मेरा, वह माचकर चित्रा का चित्रश कहा है ^{9 हा} °

न्द्रकर कितन ही बहु भी सकती की, बहु यजन कगर पुत्र क निर्जरी की। म् स्वन मिटा है ना मुक्त यह-द्वारा

19यनम् वर सरा कथा प्यास कहा है ^{१ ॥ १०}॥ माप्त करता जा सदा का भाराकान्या.

इ.स.व इ.मा था मा स्वती-साबनी में।

व्यक्तित विकर्णे का बाहरका या बनाता. वर बर्गवान करा का विधाला कहा है ? हराई



३२--- तुलसी-पंचक

मगणपराम 'रमारर'-सं॰ १६२३ नर्तवान }

gcq4

इदस-कार इद भारि धर्म भूव मंतृत मंत्र। श्राप्त कार्य दिश्याम बागुको भाग ग्राप्तिकार इ बहु विशि गर्क वितर्क ग्राप्तम् करि सहकारी। श्राप्ता वित्तम पुरात सिंगु स्राप्ति मुणा विकारी ह ग्राप्त इंद प्रवंपति वाधि बैंग कार स्वार तासी मर्ग्यो इति तुल्लीन्त्राम ललात यह सम्पारित-सामत बग्नी।

.

भाषा ज्यान जवाम पूरि जङ्गा नम नाम्यो। वर्षित जुलि बहुत्य बनल बन विमय विकासी व र्यानक माजदर्शन राज स्थाप स्थापन ह्यापी। वर्षात्र हुत उट्डक हुन्द बहि सुक्क बक्कारी। किंद्र नितेन नाम नाम्य अस्य माप्य माहसदे। अञ्चलनाम वं ज्यान समय बन्द क्षिणा सर्मिना महान्

.

श्यमः । इतर चर राम-खांक मानस धन्द्रशारी। धन्द्रशारी। धन्द्रशारी। धन्द्रशारी । धन्र



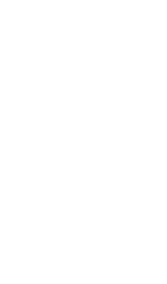












जिन पराग मों चौंकि श्रमत उत्पुकता हैरे,
रहित-रहित रसकानि रिवध श्रील गुंज घनेरे।
बरन-बरन में मोहन की श्रीतमृति विराजति,
अच्छर श्रामा जामु अलौकिक श्रद्मुत धाजति ॥ ८ ॥
सुख पद घरन सुभाव विविध रसमय श्रीत उत्तम;
शुद्ध संस्कृत सुखद श्रातमजा अभिनव श्रनुपम।
देस-काल-श्रनुसार भाव निज व्यक्त करन में,
मंजु मनोहर भाषा या सम कोउन जग में॥ ९ ॥
ईरवर-मानव श्रेम होउ इकसंग सिखावति;
जजल स्थामल धार जुगल यो जोरि मिलावति।
भेद-भाव तिजवे की श्रीतमा जब रस-ऐनी,
योग गहत तिनसों तब मुन्दर बहति त्रियेनो॥१०॥

करी जाय यदि जासु परीच्छा सविधि जथारथ, बाही में सब जग हो खारथ श्रम परमारथ। बरनन का फरि सकै भटा तिह भाषा-कोटी, मचलि-मचिट भांगी जामें हिंग माखन-रोटी १॥११॥

जाको जो रस श्ववगाहत जाही में श्रावै। कैसो ह गुनवान थाह जाकी नहि पाँव॥ रही यही श्रवसेस एक श्रारज-जीवनधन, चितनीय यह विषय तुमनु सो सब सजन-गन॥१२॥

वंग और महराष्ट्र, सुगम गुजरात देस में, श्रटक कटक पर्यन्त कहिय भारत श्रमेस में। एक राष्ट्रभाषा की बुटि जो पूरत श्राई, इतने दिन सों करत रही तुझरी सिवकाई ॥१३॥



मुत-नेया-हित नामु रुचिर रुचि रहनि सदाही। जनमें पृत कुरून, खुमाना माना नाट्रॉक ॥१९॥ जाय फहां अप, प्रनिह तुम्हें बहि पाल-पास । याकी वड याकी जीवन यस स्थाप मरोसु; निरालंब यह श्रंघ, यादि श्रवलंघनु दीजै; ननसों, मनसों, धनमों याकी रच्छा की नै ॥२०॥ यही रहित जननों की केवल निन ष्यभिलापा-'सफ्छ होहि तुव सर्वे उच्च उन्नत प्रिय आशा ! भक्त थार थान्युद्य-मूर्व की किरन प्रकामें! नेसिंद श्रविद्यारिनि, ज्ञान-मय-कमल विकास ॥२१॥ 'जागृति त्रिविध संयारि यसन्ती नित सरसावै ! निरमंड पर उपकार हृदय मधि छहरि मुहावै! मोहें मुजन रमाछ, प्रेम-मंजरि चहुँ छावें! निज-मापा-कि-एका श्रद्ध लहि परम मुहार्व ॥२२॥ 'कवि-कोकिल सत्कात्य-कृक अपनी दशर्रे ! शुनि शुन-गाहक रिमक अमर मंजुल गुँतारें! जगमगाय जातीय प्रेम, मुघरै चरित्र-वल ; सबके हों ब्रादर्श उच, उत्तम अर उज्ज्वल ! २३॥ 'विद्या विनय विवेक प्रकृति छवि मनहिं छुमावे ! दुख को हो वस श्रन, देम भारत सुख पावै! परमातम घटन्यट श्रन्तरलामी. पुरहिं यह श्रमिडाप सत्य नारायण स्त्रामी ! २४॥ (दरवनारंग)

[#] कुपुत्री नार्यंत क्विचरिष कुमाना च मवति-अीरांकराचार्य ।



हिन्दी-पश-रत्नावसी विषयर बनेगा रोप मेरा खल ! तुमें, पाताल में, दावान्ति होगा विपिन में, बाइव जलधि-जल-जाल में।

जो क्योम में तू जायगा तो बन्न वह बन जायगा. चाहे जहाँ जा कर रहे जीवित न तू रह पायगा ॥१४॥ बोट-वर्ड जितने जगत में पुरुष नाशक पाप है.

लौकिक तथा जो पारलौकिक तीक्ष्णवर संनाप है। हों प्राप्त वे सब सर्वदा को तो विलंब विना मुक्ते कलयुद्ध में संध्या-समय तक, जो न में माह तुक ॥१५॥

अथवा अधिक कहना युधा है, पार्थ का प्रश है वही, माची रहें सुन ये बचन रवि, शशि, अनल, अंबर, मही। म्यांख से पहले न जा में कल जयद्रथ-वध करूँ,

ता रापथ करता हैं, स्वयं में ही अनठ में जल महें ॥१६४ (मयद्रथ-त्रथ, सर्गे ३)

श्द्रार्थ

१—पद्मावती-परिणय

१—इर=हृद्य, पेट, गर्भ। भान=भानु। रे—विजयव्यनी हुई है । हीर≈हीरा, यहाँ दाँनों से उपमा दीनवी है। कीर≈तोता, यहाँ नाकसं चपमा दी गयी है। विम्ब≈िव-म्य फल, श्रधरोष्ट से उपमा दी गयी है। विह=उसे, विधाता। सचि=शची, इन्द्राणी। ४—चुद्दृयो=रुग गया, फॅस गया। फुल्ल=प्रसन्न । ८-संभरि=सॉभर प्रांत। ९—बैसह≈वयः, रुम्र । वरीस-वर्ष । ११--पानीय=तज्ञ, कान्ति । १२--कंद्रप=कामदेव । १३-सुरत्तह=प्रेम, लगन। १४--केली=प्रसन्न ।

१८—कगार=कागज, पत्र ।

१९—यंव=बाजा ।

२०—सूक≕शुक, तोता ।

२१--चिकट=मैला, कुचला।

२२--नवसत=सोलह।

२४—सोब्रज्ञ=सुवर्ण। २५-जेम=जैसे ।

२६-गवरि=गौरी, पार्वती !

२७—मुद्ध मुद्ध=धीरे धीरे ।

३०--पद्धान=तैयार किये गये ।



—निर्देशे=मं,द्राः

-संस्टब्धला —टपाधि≕दुःसः ।

–येदन≕पेदनाः यष्ट्र । -गौपर्गाःनंग । –गाल≈भोषकी । - मिग=शिष्य १

–मेरि रहना-टट लाना ।

--धर्मा=मासिक. ईश्वर । निवासई=कृपा करेगा । —लंघना≃भवा ।

77.77

—राज=प्यारा, इंड्बर । लाही हेर्यन **** लाल=ब्रद्धवेना ब्रद्ध

ही हो जाता है, यही इसका ताल्पर्य है। उपनिषद् में भी "प्रदायित् प्रदीव भवति" कहा गया है।

—मोटी=वटी । विना जीव की मांम=धोकनी । —शीदार-दर्शन ।

—संचर=प्रवेश करता है। मालै=कष्ट पर्वेचाता है।

—ग्योटी=निकम्मी । बाट=रास्ता ।

—पैठ=हाट ।

---पला=पहा ।

की परीचा ली थी। बद्या श्रीर शिव तो इस परीचा में दर्जाण न हुए, पर विष्यु भगवान ऋषि की लात का आचात

सह कर उलटे उनकी विनय करने छंगे ! ५—इनग्रय=ऍठठा है ।







```
शब्दाय
```

२१—वेदन=वेदना, कष्ट । रे**३—सॉकरी≈तंग** ।

२४—खाट=धोकनी ।

२८-सिख=शिष्य।

१९—लहें हैं = मंड। ३०-म्बह=धृल।

३२—इपाधि=दुःखःः **२२—धनी=मालिक, ईश्वर । निवाजई=कृषा करेगा ।**

२५-मॅंड़ि रहनाःडट जाना। **३६—लंघना=भ**खा ।

२८—हार=प्यारा, ईश्वर । लाही देखन '''' लाल=ब्रह्मदेत्रा ब्रद्म ही हो जाता है, यही इसका ताप्पर्य है। उपनिपर् में भी

"महाविद् महाव भवति" फहा गया है। ४०-मोटी=वडी । विना जीव की मांम=धोकनी ।

४४—शदार-दर्शन । ४६—संपरै=प्रवेश करता है। सालै-वष्ट परुवाता है।

४८--योटी=निषम्मी । दाट=रासा ।

५१—५ैठ=हाट ।

५८--पला=पहा ।

६०—भगु=एक शर्ष, जिन्होंने बद्धा, बिग्यु स्त्रीर शिव के शील

की परी ए। लो भी। हका और शिव तो इस परी हा से डसीर्ण म हुए. पर दिष्णु भगवान ऋषि की लान का द्वारान सह बर एलटे उनकी विनय बरने लगे।

६८-- इनराय=घेठला है।

३१—अंदि≃ऌलका का। सन्नाह≃कवचा ३२—तसे - तंत्र । ३३ — बाग=घोडे की लगाम । नाग ≕शेष । ३५--भोतःस्कृ ३७—रिनर्धन=रगुत्तेत्र । रूप=रुख ।

हिन्दी-पद्य-रत्नावली 🕝

३९-- थुर=सेय । पती=पंक्ति । नालि=नजी, बंदक । सीरद=तीर । मार=छोडा, यस । गजनेम=ग्जनी का बादशाह शहापुरीन

४०---(यही=चारंग । योज=वित्तली । स्र=सर्व । कौतिग=कौतुक । रतन प्रतन-सराचार, लववथ । धर-पद्धी ।

४४--परिटिटय='नाश्वत का ⊦हर वांसह=हरे वांस । गठिप=गौठ

बांब कर किन्न-रिया। क्ष्ट्यां-क्ष्ट्रिन किया, मुमीना कादि रिया । दश्या = द्रमा कि.सा । हानर = हातर ।

--- क्योरदाम की मान्यियाँ और शब्द

-- 31816 - 5m H |

-----वन्याः - रनगत् वदा नगतः वद समि≈स्याही । ---वाक्तिस्थान्ति । अस्य सामानास्य साथ सामा।

. - Partie . . de ·--------

--- Tr --- 21 HII

·· -- कर चान-सन स्था - - पटासना-पाद्मना स्वया ही चार जातियो संस एक 🕏 '६० ' बर' प'दान र-उस स्वीसन्त्रका वाबहाता **है**।

2 17 - 17 2

140

शञ्जाध १४३ २१-वेदन=वेदना, कष्ट । २२—सॉकरी=तंग। २४--खाल=धोकनी । २८ – सिख=शिष्य । १५—लेहें दे=मंड। ३०-ग्वह=धृल। **२२—इपाधि**=दुःखा **३३—धर्ना**=मालिक, ईश्वर । निवाजई=कृषा करेगा । ३५−मेंदि रहनाःइट जाना । ३६-लंघना=भरता। १८—लाल=प्यारा, ईरवर । लाली देयन '' : लाल=मध्यवेत्ता मध ही हो जाता है, यही इसका तालपर्य है। उपनिपर् में भी "महाविद् महीव भवति" कहा गया है। ४०-मोटी=बर्टा । विना जीव की मांम=धांकनी । ४४---दीदारः दर्<mark>ग</mark>त । ४६—संचर्य=प्रवेश करता है। सालैन्य ए पर्टचाना है। Y८—स्पेटी=निवयमी । दाट=सम्ताः ५१—५ैठ=हाट । ५५--पला=पला । ६०-भ्रमु=एक ऋषि, जिन्होंने ब्रह्मा, दिग्गु स्त्रीर शिव के शीत को परीक्षा लो भी। हामा और शिव तो इस परीक्ष में षर्पार्ण न तुए, पर विष्णु भगवान कृति की लानका साधान सह बर एलटे एनकी विनय करने लगे। ६८—इतराय=धेरहा है ।

३१—ऋंदि≖ललकार कर । सन्नाह≕कवच । ३२—तत्ते = तंत्र । ३३--वाग=घोड की लगाम । नाग=शेष । ३५—श्रोन≈रकः। ३७-रिनखेत=रणक्षेत्र । रूप्प=रुख । ३९-- धुर=मेच । पती=पंक्ति । नालि=नली, बंद्क । तीरह=तीर । सार=लोहा, यस । गजनेस=गुजनी का वादशाह शहाबुदीन रोसी । ४०--चिहौ-भारो । योजु=विजली । सूर=सूर्य । कौतिय=कौतुक । रगन मगन=मरादार, लथपथ । धर=प्रध्वी ।

हिन्दी-पद्य-रत्नावली

१४८

×१—नह=न । ४४—परिद्रिष्ठय=निश्चित को। हर गाँसह=हरे वोंस । गठिय=गौँठ वांच कर । किल्ल=किया । दहयां=दहित किया, जुर्माना

आदि लिया । इस्मा=दग किना । हनर=हन्र । २---कवीरदास की माखियाँ और शब्द

१--परेशाम=प्रणासः । २-वनराप=धनराज बडा नगळ पडा साम=स्वाही। ५— ह्यादि नाम=परशास्त्र का नाम साथ नाम।

६—सिल्डि=पन्दर ११—मनुषां=मन । ४३— तरा=बृहापा । मुद्र=मर्गा ।

•९—करु चीत=मन लगा । ६०—पद्मिनी=पद्मिनी क्षियों की चार आतियों में से एक **है**। किन्तु यहाँ पश्चिमी शब्द में स्वीमात्र का बोध होता है।

उद्धग-गोद ।

```
१४९
२१—वेदन=वेदना, कष्ट ।
२३—सॉॅंकरी=तंग।
२४-- खाल=धोकनी ।
२८ – सिरा=शिष्य ।
२५-लेहें इं=मंड।
३०-ग्वेहच्धृलं ।
३२—इपाधि=हु:स्त्र ।
 २२—धनी=मालिक, ईरवर । निवाजई=कृपा करंगा ।
 ३५−मॅंंद्रि रहना=डट जाना ।
 ३६--लंघना=भखा ।
 ३८--हाह=प्यारा, ईश्वर । लाही देखन *** लाल=ब्रह्मवेत्ता ब्रह्म
      ही हो जाता है, यही इसका तात्पर्य है। उपनिपद में भी
      "ब्रह्मविट ब्रह्मैय भवति" कहा गंया है।
 ४०-मोटी=वर्टा । विना जीव की मांम=भोकनी ।
 ४४--दीदार-दर्शन ।
 ४६—संचरे=प्रवेश करता है। सालै-कष्ट पर्वचाना है।
 ४८--सोटी=निकामी । बाट=शस्ता ।
 ५१—पैठ=हाट ।
 ५५--पला=पहा ।
  ६०-भ्रमु=एक श्रापि, जिन्होंने ब्रह्मा, बिग्गु चौर शिव के शील
       की परीक्ष लो थी। हाझा और शिव तो इस परीक्ष मे
       हसीर्ण न हुए, पर विष्णु भगवान कृषि की लान का आधान
       सह बर उलटे उनकी विनय करने लगे।
  ६८-- इतराय=रे ठल है।
```

हिस्टी-पत्त-स्तावली ३९—जो मन पर खसवार है=जिसने मनको वशमें कर लिया है। **०२---परतञ्च=प्रत्यत्त । राञ्चस=गत्तम** ।

५६—सस्किरत=सम्क्रत । भाषा=हिंदी भाषा । सत=सत्य । =१--मासन लागे=पद्यनाने लगे, खीजने लगे ।

८२—प्रीतम≈परमात्मा से वात्पर्य है । सुनी=सो गई । ८३--जूमना=लड्ना है। मॅडा=डटा है। घमसान=पोर रण।

ius

म्रमा=श्रः। कायराँ=कायरां की । ८४-सवृरी=संतोष, धैर्ष । सोंटा=इंहा । मगरूरी=धर्मड ।

अ-मानिक=यहां माणिक्य से परमात्मा का ता पर्य है। अप न= व्यपना । धन=स्त्रो । सपद=शब्द, नाम ।

८६---चाह =कामना । निर्यासना-इच्छा-बहित । तत्त-तन्त्र, मझ-द्यान । रत=यनरसः ।

मालह वय की चावस्था तक किसी स्वी का मुख तक नहीं दम्या था, किन्तु महाराज रामपाद की भेजी हुई वेश्याओं ने इन्हें श्रापने रूप-लायगय पर मोहित कर तथी श्रष्ट कर िया। पारास्रर=पराश्वर वेदश्यास के पिता, यह भी एक स्तीपर मृत्य टाफर अपनी निपक्षया से हाथ थी बैठ थे। कनमें का =यागिया का एक भर । माहिब=मालिक, परमेरवर । रमना=मायः स श्राभवाय है ।

३ - पाल-भावता

/==नवनात=मरस्यतः , शल=वचलः सर=लडः । माधुरी= ामटासः । अस्त्र हारा स नात्पय है । कांचर≈सुन्दर । एकी= लक्की ।

२—अस्यराइ=लटपटा कर । हुटुँधा=दोनों श्रोर । घुटुकन⇔ घुटनों के घल । महर्द=गोप, नंद से साल्पर्य है ।

रि—गुदिराँ=पर । मृतक-मृतकः=गहनों के यजने का शब्द विशेष । मृत्यर=शब्दायमान । पियरी=पीटी । भीनी=स्म-

भरी, मीठो । वारो=होटा बालक । मिनिन्दु=काजल का दिटीना । श्रमम सर=पंचवाण-धारी वामदेव । करिन=की । सलदाविन=िकलानी हैं । सुपर=चतुर । दृतुरियाँ=छोटे-छोटे

दाँत ।

१---रॅमै-पर्लं । स्रीटस्टे, बार बार करें । जोर्-मोह-जो मन में आप बरों । एहि खंतर-हतने बाद में । खंधवारि-जोबी ।

 प-धीरी सपेद रंग की गाय। दाष्ट्र(=पलमद को। चौति = स्याद दंगी। सींद्र=क्रमम।
 प्रोकि=प्रजली। सल्मलात=प्रमच्याता है, दिलता है।

निषट-विरक्तन । बरववी-रोकने पर भी । ही-भी । हीराम न बहारी-मुखाबा हैने पर भा न भूलुगा । हाप-इपं, नर्व । ७ -विभागी-तम किया । विमन्तुम्मा । बातु-विज्ञा । बलवीर-बलराम । अवाई-वृत्तवादीर, रवर्थ दुवर की उपर समान

दाला । धृतन्ध्वं । सीन्सीगद । तीन्सी । ८—दंशीवटन्तव स्थान, जता पर शीकृषण यट दक्ष के नीन्द्र

८—वंशीवटन्तव स्थान, जहा पर शीवृष्या यह हुए के तीने स्वीतिक दर्श बजाते थे। सीन परेन्स ए। तीने पर १ तीकारसीका, सिक्टर। नेदन्वपट : क्यारियान्वचल पा तील, सा दुवणा।

- -- चल्ला ब्रह्म । भोग विन्हें दी बरती हैं। भीन समीत । एदि स्थिन हैरात बर बर । भेगीन श्रीही। बाह्यिन नामाती हैं।

हिन्दी पद्म स्ताव नी 943 १०-- वतैया≈वलाय । खिमावत≈तंग करते हैं। धिरयो=धमकी

सी. झौँमा । ११-- दोटा=छड्का । गादे करि=मजबूनी से । सॉॅंटी-इडी । सुमेन=देवतों का पर्वत; यहां समस्त पर्वतों से ऋभिताय है। मार्रेगपानी=हाथ में घनुष धारण करनेवाले विण्णु भगवान ; यहां ओक्रमा से तात्पयं है ।

१२ — भेंबरा=लट्टू। चफ=चकरी। ऋारे पर=साक पर। पोरी= डयोदी । तारी=जाडी । मोरी=मोडकर । तुन डारति तोरी= टात से तिनका द्याकर तोड-तोड कर फैंकती है, जिसन कहीं तजर न लग जाय।

१३--- बारे=छोटे में बाळका तिक तिक≃मन्दे सन्दे। चारन≠ चराने के। । ग्रॉफ≃में । १४--किनयो-गोड उद्धग । निर्द्धनियो-स्वाजिस निष्कपट ।

कारत=लिये । १५-विरावन=चारो स्रोर चक्का लगवान है पश्की की इकड़ा

कराते है। सीह=सीगर। बदगड=बहल। कर। ब्रति=छोटा मा । रिगाद=पैटल यन्। कर ।

४--- ब्रह्मायस-वर्णस

१---चिट्रपन=चैनस्यना का समूह प्रमारिक्य सग=पहार र्वाक्रत∞ते र ।

-— द्याविरुद्ध=वेराकटाक (ह-लमिन्स्र) विभृति⇒ऐदवर्ष, प्रभाः

३—- शक्यण≈शय भगवान ।

>—स्मारमन=तक्मीनव्य वित्य भगवान । वानिक=इटा, शोभाः

६—श्रिठ=भौरे । किन्नर=देवतों की एक जाति। सुखगुर्हा=

व्यानंदकारिणां । सही=सुन्द्र । ७--कनकः स्वणं ।

८-चित्र को-चित्रित, लिखा हुआ। पोड्शदल-सालह पंराहियों-बाला । चत्राकृति=गोळ ।

९-कमनीय=मन्दर । कशिनिका=कमल का छत्ता, संयती । पुर-न्दा=इन्द्र । विभाकर=सर्य । निका=समृह । उड्डनारा । कौरतुभ=एक मांग्, जिस विष्णु भगवान धारण करने हैं।

५-नाम-राज्य

१--विषमना=हार-पर में भेद सुद्धि ।

रेरे—कुंठित=ग्र हिन, श्रपर्ण।

२ कानाश्रम-बाह्मण सन्यि, वैध्य चीर शहर यह चार बण चीर ब्रह्मचर्य साहरू य बानप्रस्थ और सन्यास या जार श्राभव है सभा आप

६- भौतिक वत तत् राष्ट्रणः भात वरः रतः धानस्य प्रमाणित म ए विश्व तथः । चाद्यं मुख्य त्रहरू होत्त अअन्यक्त सहस्त अध्यातः वसे वस्तायाः भेन-सन्द ક્રમ જીવા ના કારાના તાલા લાગા સાથે હોઇ ફેં

youther the teather to delid the title photological and a me france when empermaile etente atit eret er it ten unter mit-Ly & L. Ta & 2 - executive & event direction

. . . . fett eiter er ten mure utte une ent our cold the new many as

िन्तुं-यग्-रनावळी जगहरमा=विश्वासा, परब्रद्धा वसी=पानी। संयुल=सरा-ष्टुमा। नङ्गा-तालाव। विजु=पंद्रमा। स्यूरा=करण। ६-वाजिसप=त्रश्यस्य यहा। गुनातीत=निर्मण। पुरंहर=डंडी

परिचरजाः परिचर्या, संजा, काम-काज । वमाः पार्तती । समतमः सदा। समाविद्व स्टाइः चंचतता छोडस्टर, निरचत

५.—सकाशिक्समण्ड, सम्तान्त स्थापन स्थित स्वतंत्रस्य स्थापं स्थापनी पुत्र स्वतंत्रां स्थापनी प्राप्त स्वतंत्रां स्थापनी प्राप्त स्वतंत्रां स्थापनी स

»—श्रहनिमि=दिनगत । गातीत=इन्द्रिय-ज्ञान से परे। पार-परे ।

३ -- तथः नामः - रमानवःमः २०मारमणः । १२८ = पृष्टः । ४---५६ - १९४ । ४----१९७ -- अधाः । वरः । अस्य अस्तानाश्चलानः ।

३--ल शान्द्रसम

वैना बीवाःसदक कोहारःचीराहाः।

भाव से ।

८--गाहा≈गाथा ।

 नव्य क्रांतिक कर १८०१ । क्रम्य सामा व्यामक प्राक्षण वाद १९५६ हत्यात । व्यान है। सर याद्धा । प्रमानक्षण वासक्षण ।

- र—जाल=समृह्। लीलिवे को≍िनाङने के लिवे। वीथिका= मार्ग। मूरि=बहुत-से ।धूमकेतु=पुच्हल तारे। उचारी= नेगो। मुरेसचाप=इंद्रधतुष। कळाप=समृह्। सरि=नदी। जानुवान=राज्ञस। प्रजारीहै=जळावेगा।
- रे—हुनुक=हंककर । हुनुकारी=हुद्धार, जोर जोर से रोना। निकेत=घर।भामिनी=स्त्री।हारा=छोकरा, यशा। महिष= भैँसा। वृषभ≕र्वेठ।
- ४--नाद-शब्द । सविषाद=दुःख से । रावनो=गनग । मारनंड= सूर्व । वावनो=वामन, विष्णु का एक श्रवतार । श्रावनो= श्राना है । वामदेव=शिव । वादि=स्त्रर्थ ।
- ५—परानी ज्ञाति हैं=भागी जाती हैं । मंद्रोबै=मंद्रोदरी; रावण को स्त्री । मीजि=मठ कर । बापुगे=बंबाग । चाडिदै न्तट करंगा ।
- ६—डाटन व्यवस्था हुइ । केमरी-कुमार विदारों बानर के पुत्र हनुमान तिली-एक निरु भी । श्रागार-धर । डाद्री व्यवस्था । गया । ज्ञानिवनु व्याटन हैं, पा रहे हैं ।
- अ-धीतः बीट प्रषः सीजन्मामान । श्रीजन्पडे से से दहल करः
 असम से घवराकर । गाउँ-कष्ट से । गाउँ की खजावनी बाप
 टोकना । सोवनी-सायन सर्गन की सुसलधार वर्षा ।
 - : -हाटक:=माना लाय=गरमा चनन नाय=भाव, गीति : ययमान=पयन यायु जिवाय=भोजन वराया । गय=गजा ।
- विराह=मद्यागह । उपचार=देनाह । विमाह=मोह-महिन ।
 चान=चैन पामारा स कुछ छाराम । मदाह बाहा सा । नाव भ हा । रसायना रसायन विद्या हो हातनवाउ।

145 हिन्दी-पध-रत्नावली

समीर-सूनु-पत्रन-पुत्र हनुमान । बुद-बुटी । सृगांव-वैगर का एक रस विशेष ।

७--दोहायली

१-परमारथ-मुक्ति । बारिद=मेच । ४-गाउर-भेडे।

५-पपीहरा-पपीहा, चातक।

६-- स्वाति संवित-स्वाति सचत्र में बरसा हुआ जन, हिमे पर्योद्धा पीता है ।

७-श्रमत भोजता

१२ - गीर विचार, ध्यान । १३-सकान सुप्ता पुरुष । बरमु कीमड ।

१४-मित्र १) हिन् २) सर्व ।

४५-मन्त्र स्थाती काक की कारिन्य । मूल सरने पर ।

२६ - में र सहाया भिर प्रजान मध्यामी हना।

१ -- यम हत्रम

४८— तत्रास तक कारकार पह जा वाला बासनवर सुख जातः है re-mura fax que atte an laufa brau

• '-- कमा क्या चाम ** - #F WELL

マノー 打する はくも =-- देश-पहिषा

- वेश्वरेश्वार प्रकार त्राहरू है। तह-विवास लेखिनापुरमा साम्ब स न पत्र हे प्राप्तिकारण स्थानाम्य । वरेदाः



845 हिन्दी-प्रथ रत्नावजी ४--सुवरनमई=स्वर्णमयी । पाय=पैर । गीन=गमन । बंडबीर=

बलरामजी के भाई श्रीकृष्ण । ६—पगा=पगङ्गे । सँगा=कुरता । उपानह-जूना । सामा-साज, सामान । श्रमिराम=संदर ।

u-कलपटुम=स्वर्गका एक बृत्त, जासय इञ्जाक्षों की पूर्ण कर देता है। खलेड्या=गड़बड़ी, सीच विचार, चिंता ! श्रांग≈श्रंक । , ८--जायॅ=देन्व । इतै=यहाँ । परात=याल । नैनन के जज साँ=

थाँसओं से । ५-- तंद्रल=चाँवल । तिय=स्थी । हते-थै ।

११—कॉम्प=बगल । १२---जीरन-जीर्ण, पुराना ।

१३---गोय-श्रिपा कर । पनीविधि सृत्र अन्त्री तरह से । पोटे॰ योटली । ऋछोट वडी । चामर चाँवल । बाव-प्रेम ।

१४--हल कमक, शूल । हियस हदय । धरहरै कॅापनी है । ब्रोक शोक भएड के भगड़। हालों करा। चकिन में-चक्रक

र्वियों में । १५-पावक एक पाव । सभा धान्य विशेष । कन पनि । १८-१कडि गरीय के।

१५—विरवक्तमी देवनात्रों का शिन्धी । धादे पैदल । अब व्हिनि । २० — तदराय यादवीं के राजा श्रीक्यत । भाग भाव ।

१० – रहिमन-स्रघा

•—शोर बच से।

४—गाम यथन गाँउ, नोक रहस्य । निरम नीरन ।

५—डार≔डाछ । पात≈पत्ते ।

६—दर-दर=द्वार-द्वार । मधुकरी=जैसे भौरा एक-एक फूल से थोड़ा-थोड़ा रस लेता है, उसी प्रकार एक-एक घर से थोड़ा-योडी भिज्ञा माँगना ।

८--दाव=श्राग ।

९—कमला=लक्ष्मी । पुरातनपुरुष=सनातन ब्रह्म,विष्णु भगवान्।

१३—केर=केला । रस=धानंद, मौज । १५-विषे=यीच में।

१६—सजाय=सजा ।

१७-खन=हत्या ।

१८—स्गु=एक ऋषिः पाठ २, छन्द्र ६० की टिप्पणी देखो ।

१९—वित्त=धन । ऋंयु=जल । हित=हितकारी । ः

२२--कृषरो=कुवडा, टेंदा-मेदा । नखत-नचत्र, तारा । 💛 🕟 २४-गाड़ा दिन=कष्ट का समय।

९८—वमन करि≕क्नै करके । स्वान≈कुता ।

^{३०—रसहिं=श्रानंद के। । वंधु=मित्र, भाई।} ३२—पिक≕केायल ।

रेंप-मुनि पतनी=गौतम ऋषि की स्त्री श्रहस्या।

रे६--नाद=संगीत का शब्द्र।

४२—दही=जलाई, मेटी । भावी=होनहार ।

४४—मही=मट्टा, झाझ। विलगाय=श्रलग हो जाता है। भीर= कप्र, विपत्ति ।

४५—यैग=पैर । बसुधा=पृथिवी ।

४७—हाइ्ये≃हगानी चाहिए ।

४८-सहसाति=शान्तिसहित ।

हिन्दी-पश्च-रत्नावली \$60 ४९--करिया-काला । ५१--पति-मान-प्रतिष्ठा । माध्यन-चास्प्रनहार-श्रीरूप्ण । ५३--वापाल=भिरः। ५६---कलारी-कटवार । पट--विभावि≈स्याधि, रोग । ६०—द्याम्य=जहां मन और वाणी की गति न हो; प्रज्ञानंद । ६०--नै-नग्र हो कर । ६४---विपान-सींग । ६६---हरिन=माया-संग मारीच से ताःपर्य है । ६७-(देखर=संवद, दत्त । ६८--वर=घाद्दे । कानन-धन । क्-कृष-यात्रा, यहा मृत्यु स ऋभिप्राय है । s≂∽धीस कस । सगल हस :

ऽ≻—जती यति, सस्यामी । -६--सनत सदा। १५-- जन्द्रक जन्नद्र । - —मुकुरगाया पीठ फेर ही उत्तर्मान हा स्थ

११---१(उध-र्था-विस्टा

·—माभिते शतकर राज्य है ·—- वक्तीय वेश ए जा साम इ.वि.एक ⇒म विविद्य प्रश्न सामी

—पापेक छन्य श्रमुक्या।

--- समा समन्।

्—सुप्रकार र ०१व में अरुनवार ००

272







१६४ (हिन्दी-पश-रत्नावसी ८—पाता पर्नाः सुनसी, विन्वपत्र श्वादि । सेहरा-हार । मदः स्वासारिक सवस्य । सेहरा-पर । सून्य-प्रान्थाना । प्राप्त तम केहरा-प्रसातिपद्यार है। सारकः । साम-प्रतान व

नाम । देदरा=मंदिर । १५—विहारी-मुक्तायकी

१-अव-वावा सामाधिक दृश्यः। नागरि-व्यपुरः। सार्ध-४३६ हरित दृति हरे रंग की शोभाः बीहे व्ययोग् निगर्ध हो

हरत दृति हर रस का जामा; पाठ कथात राजा न हर ली सदे हो। ---काद्रमी कमज में पहनने का एक पेरदार वसा। यानिक

:---पति हाल । आय-दियो । त सूच्या पंचर्या । अस्ति स्वत्वत्ती है । बाद्यानल श्वत में स्व हुद जाता एक बार अत क एक बन में सही ही इस

यामा तमा गडा । स्वास्त्र घषमा गया । ध्वीष्ठयमा वसः हो स्वि ६८ स्थत देखत पात कर गया ।

हरा ।

नावन व्यानीवन
 न स्नवना वत्रवीळ गाय-रक्षः

--सारीन सुन्तर कात्य (प --दर राष्ट्र रा समावर आस्त नलकः बांधुरिज्योतीः)

चार्थ १४५० व एका प्रतास स्थापक स्थापक स्थापक । चन्द्र प्रतास व्यवस्था स्थापक व्यवस्था

 ४--हुगत दी अजाओं का एवं, साथ हासन । रह-हु:स्व । मातम समावम ।

१५-म्यूनि धृति, यह । सुमृति श्मृति: धर्महागण ये: प्रत्य । निमद्यः निवंहः।

१७—पटकः च्याकः । रजः धृलः । राजसः शासनः । नेहः (१) प्रेस (६) तेल ।

२१—कुरंग-सुग ।

२२—शगर=चेतर्। स्राय=इङात्।

२५--ययानः कीनिःयणेन । सराध पराः पितृपद्य ।

२६--वायस-कौवा। यहि श्राद्धका भोजन।

२०-सरैः पाम श्राता है। वर्षेचे मन कपटी। ३२—गरिया=वेयट, महाह । मोधि=खोज । पाहन**ःपत्थर** ।

रेरे—भजन∗(१)भजन करना (२) भागना। भज्यो≂(१) भजन किया (२) भागा । नासों व्यत्मेश्वर के नाम से ।

जामों=संसारी विषयो मे ।

३४-पतवारी=करिया।

३६—दोरघ सांस=न्त्राह । सार्ड=ईश्वर ।

३७—श्रनाफनी=श्रनमुनी करने की क्रिया । गुहारि=पुकारि । वारक=एक वार । वारन=हाथी ।

३८--यानि=स्वभाध ।

३५--चाय=हवा ।

४३—वलिये=वलिहारी ।

४४--- अपना-अपना विरद्=अपना अपना थानाः जीव का पापो का कमाना ऋौर परमेश्वर का पापों का नाश करना।





१६८ दिली-पण-स्मार्थः १.०-चाँडी-वर्णन

१—मार पत्रा-मोर के पर्श । लील-श्रवाद । मार्द हे सर्ला न्द्रनार-(१) लाउल्य, सुन्दरश (२) नमकीत्वत ।

३—ितम-वेद । बारम-दाम । सुत्रात चतुर । ध—साद वारिपर रारत ऋतु के लेप । पीरहर के चे सकात। पीठ-पवळ, सरेद । तीठ नवल, तथीत ।

६---वेतु -बीतुरी। निवाद-शब्द। धीना चर बीणा चीर बीतुरी के सपुर नवर में धड़मा के रध में तुने दूग मुग मुख दोकर टड्डर जाते हैं। फिर धड़मा के से चामे बड़े दवति पति चीर पत्नी। धमन चाननर, जिलास

अ—वहीँ रितु ऋतु झ तै—जसन्त याम अया शरत । शिशिर, भीर हेमन । जलना स्था ८—मरकत सीत्रम । अवाल मेंगा, विद्वम । मकुत मुत्ता माता ।

हार होगा। प्रवास भुजाः तरकीय रंगतः ह उत्तीरमें स्थाः प्रकासम्बद्धाः तरह हतक वालागः व्यवस्थानस्य

प्रकार कार्याः वरहर्गक वःस्यः विस्तासितः
 प्रयास्य वाध्यः हाः
 व्यास्य वाध्यः ।

१४--- हुबल्डय कमा ४०३ - प्रश्ति सम् । त्रशत् स्मा[®]क स्मत-

११ -- १वट्य कमा काइ पंकारकारमा व्याप्त स्वाप्त स्वा विकास विकास विकास

१६--चातक पर्याता। काक चक्रश

१६ - प्रज्ञायवर समाय जिल्ला है कि प्राप्त समय एक गमन नृष्टी बटबूज हिसाई जना है। उसके एक पुने पर नारायण ११९१६ प्राप्तण कर एउन हैं और समरत में ए राज्यायण

२१--मिद्धान्त-मार

१—हिनभंत्-चणभंतुर, नारावान । नागरचतुर, रिवयः ।

४--पण्पनानीमध्या विचार । पळ्टल्लड्गई-भग्नड् । निवारनी रोषना चाहिए । प्रपंच-चट्टमारल्ड्डी बातां वी पाटताला ।

६-- गुप=वुँचा ।

थ-जगमां=भारक रहा है।

 ८—हुत पेट्ट । इंपति॰ पति•पानीः भीकृत्व श्रीर राधा के नाव्यवं है ।

५-पातिवर्गानि, शंशीयवाती वी गाता। श्योगनुबन्धी राधिवाती वे पिता।

राधवाता व ।पता । रिक्नावराव्याम, अष्टिकः । सनसावरा सनीवादितः । रसा-द्यं पाननः व्यक्तिः ।

।। – नामध्यः नामधान

•

•• शिरपर वत कुष्टांत यां

THE RESERVE THE STREET STREET

Section 1. The section of the section

Service Services (Service Service Serv

१७२ हिन्दी पश-रत्नावळी

५--मिख=शिहा, उपदेश। भेपत=दवा। ६-शासीव्दर्गम ।

श्रीक्षा=नीच । छीलर≈दिद्यला, जिसमें थोड़ा ही

भरा हो ।

११ -- पिसुन=कपटी । दाध्यो=जला हुन्या । खाँछ=मट्टा ।

१२-- विरवा=पेड ।

१४-रसरी=ररसी । सिल=शिला, प्रत्यर ।

१५—विलम=विलम्ब, देर ।

१७-- अयोधः मूर्यः।

२०-- उद्धि=समुद्र । तोय=पानी ।

२१-- व्यौक=व्यंक, बात ।

२२ - सरमुति≈सरम्बर्गा ।

२५-गारिक्माली ।

२६--श्रव=श्राम । निवौरी=नीम का फल ।

२८⊶सौर≈जगह ।

२९--गैर=वैर । विषे=वीच मे ।

३१-- परचै=परिचयः पहिचानः। भाय=भावः।

३२-- गाथ गाथा, इथा।

३३--- निदान परिग्णाम, कारण । भान≈भान सर्थ ।

३५- विभौ=विभव, ऐश्वर्य । उन्द्रक=त≂र । ४१-- बमाय वशः

×र--मोटी=वडी, गर्भार । पात्र≈वरनतः

yऽ– रमन रमना, जीभ । कळ्प≈कन्छप कलुवा ।

४५-- लोक-लोग । पयच्युध । प्रयोधर-स्थत ।

२१-सिटाम्न-मार

१—हिन्दंगु=स्वादंगुर्, नारावान । नागर=चतुर, रसिक ।

४--फन्पना=मिथ्या विचार् । फल्रह=लड़ाई-मगरा । नियारेनी रोकना चाहिए । प्रयंच-घटमार=झूठी यातों की पाठशाला ।

६—कृप≂कुँबा। अ—जनमर्ग=म*ल*फ रहा है।

८—हम-पेड़ । इंपति-पति-पर्नाः, श्रीकृष्ण स्त्रीर राधा से नात्पर्य है।

९—फोरति=फोर्नि, श्रीराधिकाजी की माता। ष्ट्रिपमानु=श्री गधिकाजी के पिता।

१०—मॉवरो≃स्याम, श्रीरृष्ण् । मनभावरो≃मनोवांष्ट्रित । रसा-इय-पागना चाहिए।

११-- 'नागरिया'=नागरीदास । २२-गिरघर की कंडलियाँ

१—ऋपावन=ऋपवित्र, छाशुम । गाह्क=प्राहक, खरीदनेवाला, ग्रद करनेवाला । २—ऋपंग=सृला-लेगड़ा, श्रंगहोत । सोंह=शपय । परिहरिय≈

छोड़ दे। ४—त्रा स=भय । लंकम=रावण । बात्यो=कहलाया, प्रसिद्ध हुन्ना ।

६--नारा=नारा । मारै=माइं, मारं । ७-- परस्वाग्थ=परार्थ, परोपकार । सीस**ःःःदी**जै=प्राणों का नोह होड़ दंना बाहिए, प्राण-पण से रज्ञा करना चाहिए

पानी=मर्यादा, इन्जत स्थायरः।

८—ञ्राहतहि=ग्हतं हुए ही । बाज=एक शिकारी चिड़िया ।

हिन्दी-पच-रतावली ५--वन-पाटे। मस्ति-पद्धना रही है, दुशी होती है। ठाउँ-

अगह । !०—पीरिया=डारपाळ । यगिता=स्त्री । तपै=प्रकाये. बनाने । नार

बैना-किनारा फाटना, घलम रहना । !१—वैगरभी=ति.स्थार्थ । विरह्मा≈एकाय ही केाई ।

२—हॅमाय जपहास, दिल्ली। रॅग×बानस्य । २३-गंगा-गुणनाम १—४ रम=कन्द्रप, क्रष्ट्रवा । कोल-श्कर । क्रवी=शीभित हीती

है। कैठ हुद्धा । विनि=लिनि । उत्तन-पहार चौरी-ौसा बर्ग का पहाब कैजास । जाति ज्यान छटा शोबा । <---नेकह=तिक भी । हता=था । श्रीह=में भी । कर्षारही कुष-

न्द्रमा । दशादार=धार्मवा त । द्वार करिटी=धरम कर्ममा । ÷—धीरा वस्र ६, १४म शुच निपास±वनन नाव≠पानी ।

बात=बाय पायम की कात है याचा का नाम लेक 45 184. 2

--- 60 an in fait, duigt fedoen fo anim-स्थान बद्धात कर राष्ट्रकारका यथ म या देव इस न है मानरहता। स पर है दिश्वालादिस्ट्र

pro 10 3 some land direction of the राजा त्यर-तर संबद्द हाम्बद्धतंत्र व विकासिय मह 41 000

・ ニョン・カン カン もい シャ オマモリ スクリッえどす

. - our and the country of alleger the

- तेज से भरमीभृत श्रवने साठहजार पूर्वजों का उद्घार करने के लिए, पृथिवी पर गंगा की लाये थे। बिललानी=त्र्याकुल, वीन-वेरह।
- ७—गात=शरीर । उराह्नां-उपालंभ । मीच=मीत । श्राप=जल । कालक्ट्र=समुद्र में से निकला हुश्रा विष, जिसे शिवजी पी गये थे । श्रटहर=देर, सेज । तात्पर्य यह कि गंगा-जल-पान करते ही जीव शिवस्प हो जाता है ।
- ८-जन्हु=एक ऋषि, जिनके नाम से गंगा का 'जान्ह्वी' नाम पड़ा है। श्राही=श्रन्द्वी, उत्तम। धनेस=कुवेर। मौलि=शिर।
- ९—िनगम-निरान=वेर का रहस्य। ही=हृदय। वच्छन=वसी समय, तुरंत। प्रनच्छन=प्रत्यच्च। श्रच्छ=श्रींत्य।इंदिरा≈ टक्सी।वीधे=विधे हुए,वैधे हुए, उलमे हुए।भव=संसार। गुविद=गोविद, भगवान्।
- १०—श्रसम=जेा वराधर न हो; यहां तीन से श्रमिप्राय है। ठाइ= लगाकर । कृट=शिखर । भंगै=भाँग के। पृञ्जते=इज्जत करता।
- ११—म्हामी=घोखेवाज, धूर्त । श्रवाइन के=श्रागमनों के, श्राने के । सोर=शोर । वाट हेरें=प्रतीचा करते हैं । नाँदिया=नंदी; शिवजी का वाहन ।
- १२—रस्र≃त्रानंद । रीरव=एक नरक । विथा=त्र्यथा, कष्ट । सुरी= ग्रीवी । साहिवी=त्र्यमीरी ।

२४-श्रन्योक्तियाँ

१—प्रस्त≂फूल । सिख=शिज्ञा, उपदेश । केटि=करोड़ । बहोरि= फिर । बहारि दिन≈वसंत ऋतु । सारंग=भौरा । ९७६ हिन्दी-पग-रत्नावली २—सेमर-शास्मिल । माचबी-लता विरोप । यूगे-पूरी की । सुर-सरि-वारि-गंगा-जत । विहाय-चोड़कर । यूर्यु-संग्रा। पसुंत-स्योद पर-जानवर से देयोड क्यांग् हा पर ! २—सालमञ्जे-शास्त्रिल मेगर । गोंधे-लल पार्य । प्रतिप-मांग ।

श्रक्षी=भाँरा श्रमुक्ति=श्रमुरक दुर । मुक्ट-शुक्र, तीता । ४≻-रद=दाँत । केहराँ=सिंह । जरा-श्रुत्तपा । अंग्रुक=मियार । गार्जे=गरज रहे हैं । वृँदरी=तोमद्रो । ससक=वरहा । सुतंत्र=वर्तत्र । पंशु=तैगडा ।

५—वाट=राला । ६—वनै-वर्तेः, परलेक । इन=यतेः, समार । तरनी=नीका । पर्या=पथिक ।

पयी=पथिक। - जरजरी=पुरानी, दूटी-फूटो। अवर=चक्र. आवर्स। पाहि=

यस=विष । ५—पाती=थिट्टी । गे=गये । भामै=मान्द्रम होता है । तम=अंधेग । स्वायोग्नार । स्वा-सार्व्यक्तिका

५—पाता=।बद्धाः ग=गयः । भाम=मारुमः हाताः हः । तमङ्घपराः मवासा=घरः । चर=चलः स्त्रतिन्यः । रः —सगती=मुक्तिः । चेत=चताः दः ऽञ्चलितः करदेः सिधि=मिढिः ।

'ः —सुगती=सुक्ति । चंत=चता दः, ऽऽवळित करदे। सिधि≈मिढि । ळाव=सगामा । अय=कन्याम ।

२ — बावरी=पाली, भोला-भाली। बाम=भी। बेहर मायका। बत=पति, प्रमानमा से व्याहाय है। तत=तत्र, मनमाना काम। नाह=ताथ, पति। चै=कर। मन्य=व्यालकृत बोकर,

काम । नाह=नाथ, पति । र्य=कर । सूचि≂चलकृत होकर, गहने पहन कर । ऋतुकुलै=धेम कर ।



335

हिन्दी-पद्य-रत्नावती भ-मतस्वयस्यस्य । लुक्त=बिपने हैं। अविकलं=ब्बों का त्यों,

पूर्ण । काभिदी व्यमुना । जिती-जितनी । रजत-भौती-श्वत । उच्छरत=उळलता है । निसिपनि -चंदमा । ८--कूजत-योशते हैं। कल-संदर । पारावन-परेवा। कारंडव-सारस । जल-कुकुट=पत्ती विराप । चक्रवाक=चक्रवा । बक्र-बगुङा । पिक≈कोयल । रोर≈शोर ।

५-- बालुका-मालु । बतराये-फैलाये, जितराये । मुक्त-मुक्ता, मोती। चिकुर=बाल। (३) ध्यशानः '

१—उद्र-पेट । परसन=छूता है । हाला=राल । तुचा=चमदा ।

२-कपाल-किया=हिन्दू धर्म के अनुसार एक मृतक-संस्कार। त्तो गुनक की अल्येष्टि किया करता है, वह उसके शिर में एक लाठी से खंद कर देता है। कहते हैं, इस से मृतक की जीवात्मा अर्थनामिनी हो जाती है, श्रमीत् वह मुक्त हो जाता है। भोजःभोजन । सभग=सन्दर। कुरु=एक महा प्रतापी राजा, जिसकी संवान कौरव के नाम से प्रसिद्ध है।

दधीथि=एक परमत्यागी ऋषि, जिन्होंने इद्र को बुत्रासुर-बध के लिए, बज बनाने के अर्थ अपनी अक्षियां जीवित अवस्था में ही दे दी थीं। इसका प्रयोग किया जाता है उसका किसी विशेष स्वक्ति

उचादन मत्र=उचाटन मत्र, इस मत्र के प्रयोग से जिसपर वा स्थान से चित्त उचट जाता है। स्रोपरी=स्रोपनी। शापालिक-वाममार्ग के श्रानुसार एक साधक, जो नर-क्ष्पाल जिल हहता है।

४—धूम विना की-निधूम, धधकनी दुई । विदेशम-पद्मी । लोग-छुगार-पुरुष चौर क्षी । निसावर-घटमा । छहु-रुधिर । मसान-स्मशान ।

५-रस्त-स्ट रहे है, इ.च्र. करते हैं, रोते है। स्व-शब्द । हरू-गिह-पक्ती-विशेष । अबह-अबंकर । दव-आग । तुमुल= इन्द्र, पना, ऋखधिक ।

(३) घेम-बनाय

१- सुरत-याट । लेंहु उवारी∻यघालो, उद्घार करदी ।

२-- नियाव=स्यायः इसायः। नियेग्या=निर्णयः वियाः। स्रोतर-जामी=स्रोत्यामी, हृद्यं से यसनेवाले ।

- २—हरूकत हिल्ली हुई। सात है गायो स्वयं केल धार धर सर्गा। (विकिती-कारप्रती। विवरोपट-पीतांवर। परिकर= पेटा। धनवारी-वनमाली, श्रीकृष्ण। दोनी नारी संसार-सागर से पार कर दिवा। गुक्त बर दिया। जुगको देखो। नीक-कारप्री नरह, ध्यानपुरेक।
- У--श्चास-नजवार । प्रवाधी-समनाका । प्रतियावै विश्वास वरे । इनामन-एक प्रकार का क्षण्या पाट । प्रतिय-केला । व्रल प्रति-नोषिया इट्रब से प्रति कि कार्य स्पन्न क्षणी श्वास से समारे प्रेममण दल को तुम जितना ही कारोजे उतना ही वह तहत्वता होता ज्यापन .
 - ६—प्रतित-क्यारी पाविकी का किलार क्योकित हो था। वीरकुथ-एक सिंग जिले किला अग्रक्षर करण करते हैं। गुल्ला-पुरिच्यो । पररीका-परण होती करीन का कन्न

कारावार कार्या विद्वादर्शिका, पीषी। क्षितेका नार्या कारी-कारा कोर्या क्षार्या मेंगा, गणका जनाव मुलेकारमण

८० हिन्दी-पच-रत्नावडी

पर का पद्यों, जो इबर-अबर उड़ कर खत में फिर जश्र व पर हीं। जा जाता है: जिसे खनन्य रीति से एक का हीं आव्रय है। पराये-इसरे। वाहिट्ट-व्ययेटी।

८—सरम-स्वर्ग । हेम=मोना । वेरी=वेड्डी । परमारच=मोच मार्ग । श्वारच=च्चवडार । फेरी=चंतर । त्रायुम=त्रायु । तोर= प्रक्वालित ।

५--अवियल-श्रदल, निरंतर । दहते=जन्म देते ।

२६—प्रतापनारायण मिश्र की कुछ कविनाएं

্ ৷ সন্সাস অথবং

५—प्रतिवाल वालत-वावण । विधा-विधा, कष्ट । तिशत प्रती-ग्रे बिल्कुन अताडी, नियट मृद्ध । क्रीगीत कीति , व्ही । मुधा अमृत । समये शांकवाला पकल कमल । बेलिंगारी स्थीतावर

स्मे । सिकेतन≂स्थान । -) स्टल्पा

- —शार्न किसी । विषया समय । सबुद सुडही । दाँय बार ।

.—यादमा प्रस्म पापलान स्वास्त्रला हो गया। पाकि गै=

क राय संकट हो राय । शीरी कसर भी । राज्ञावन=शाव ।

४—वृते=यलपर, सहारे से । डोलिन-डालित हैं=चलते-फिरते हैं। खलारत फिर्न रहन=्रेंठते फिर्न थे। ऐम्यन का=ऐसीका। हन≈हैं।

-(३) पुरका पर

१—मनुवॉ=मन । धृतत=ठगता है। गोहरावन=पुकारता है। साह्य=मालिक. ईश्वर ।घट-घट-श्राीर-शरीर, हृदय-हृद्य । हियाँ=यहाँ । सयाना≔चतुर ।

२—ठोरी=स्यान । गोरी=म्बी । भारी=भोली, न्ठी । नारी=तेरी ।

.२७--एंक-रोड्न १—मृत्युपर्यन्त=मीन् तक । श्रतुभृत≈श्रतुभव किया दुश्रा,

मोगा हुआ। कर्पर न होगा≈कार्नुर न होगाः उड़ न जायगा, नाश न होगा। रे—वर्ण-उपाधि=छत्तरों का खिताय—जैसे के सी एस आई.

डी हिंदू प्रादि। ५-- वाध बाप की पाग=पिता की सारी जिम्मेदारी अपने उपन लेकर, पिता का स्थानापन्न होकर । कुनवा-कुटुरव । निरं-कुश=स्वतंत्र ।

६--कोशःस्यज्ञाना। संधितःजमा किया हस्रा। परिशामः नतीचा ।

८--आराम=चाग।

५—इनसालवेंट= (चैंगरेडी) दिवालिया । विभृति=ऐहवर्य, पन दौलन ।

१८---दुर्वाद=युरं यचन, निंदा ।

११-- विश्व-पंडित, विलानी । धर्म-पुरंधर=धर्म का बोम, उठाने बाले, परम धार्मिक ।

हिन्दी-परा-स्ट्राबली १६—विरद=यश । रस=धानंद, मंगल ।

३—पौरुप=पुरुषार्थ। विपाद≈शोक। ५ –हाम=अवनि । अद्ग्य=जिसका दुसन न किया जा सके।

जो दर सहो सके।

१६—गोरस=दथ-दही । पिसान=चन, बाटा ।

 अ—चोखा=बहिया। छाइ जाते हैं=मचल जाते हैं। मनमानी मनवाही । काइक ने जे = इ.स्य में हृद्य के दु कड़े-दुकड़े करके। /५. ⊸कुल-कुलकर=प्रमन्न हो होकर । ब्यंजन≃मोजन की चीजें ।

पानेबाले≃स्वानेवाले. स्वाने के ऋर्ध में 'पाने' का प्रयोग माध्यां मे-विशेष कर बेलावां मे-वाया जाता है।

जायमां' न भी टका में रुपये का बोध कराया है। - ८ -- द्राप्त महा। महेरी सह से चावल प्रकाकर महेरी यनायी भाना है। इसका प्रचलन यज और बंदेलगढ़ से श्रविक है।

- - — परंडरडी का पड़। बटस्वड बड़ा केंट्र कड़। -३—प्रतियाग प्रताकार दुर करने का उपाय । - ५ — कडोर्गमहानाव शेळाव शेळाच मया अस्थिर वचका

ावपन वित्र ते । •५--विद्यादार जनम

- ३ — अप्रशिष्ट्रभारः। १९८५ स्वतः इट्राप्रेयः। परि-प्रसमात

५५—वस्त्राहार रूपड और भाजन ।

३०--- नगर्ना समार रह गराव ।

the first the second second

१५--नाइ छड़ाने हैं=पार करने हैं।प्रथक्=भलग।रसमय-भार्नदेशय । अलानी=धनशिल । १६—पाश=पंता । शिथितित=दीला । बाहुन्यता=व्यविकता । चावरुदा≈रकः हका । १५---गपानव=कांधारितः। भावाम=भिवाम-स्थातः। भरोप=

हिन्दी-पण-रत्नावर्श

300

मपूर्ग । २६--लहमी-वजा

· — सर्वापसङ्ग्रस्थ । उपलब्धे के बेगव । जाति : काति, प्रकार । नम≂भंगा ।

इस्ट । रह मेन सर लाय केंद्रचारती से चाँमधी की वर्ष रात्रे ख्या

- - चहुरात किरैक्शवलताना किरता है । ध्वन्तेकारित । मीरिक JYTEI atin seems

रस्म रच-राज्ञ अवर' सब्दः जाहा 'वस्तुण - बरना करा सुबक्त नामका कही। सराह प्रान्तिन

JUN HETTER 1 AFT

. 11 41 24 24 नार्वकारः नवाद्यामा चप द्वारात्रकाः

GEAT STEAT FROM THE TOTAL TENAM

३ - -- यशास विकास

. 4-1*A*1 4A !

. य इत्य क्या । अन्यान धर्मनम् का प्रान्त परिती

2ª 3 at



दिस्दी पद्म-रन्मावली 11 ५--- इंडचाप-इन्द्रधनुष । यलाकावर्ताः बगुर्तो की पंक्ति । समी शोभित । पावमी-वर्षाके ।

६--पीयुष-अमृतः। मृरि=यहतः। a-- सीम-यंग, श्राधार । कलश्र=स्त्री । रमाधर-छश्मीरदम रे .

१५— को जम्बिनी=तेजयिकी । भ्रंगायकी=भौंसे की पंकि । भई रक्त-कानुसासी, भक्त ।

चीर काला रेंग यहाँ गंगा, मरस्यनी चीर यमुना में साम्बर्ध है। < —वातं∗हवा । स्वरानाथ राहर ।

-- यजन पुजन । गुद्र चारुयण गुप्त । ३४--शक्त-प्रकार

--- वरः इटः कपिन हा इरः दर एया । इन्द्रशिन-मेपनादः। भीमात्र-स्थाय शिक्त (१) श्रास्त्रिशेष (१) 1771 v = vm yन (च.इ.स. समाचार) नत्र व.ठ-सत्रात्र । इन्हारि-

2500 AM TO ः १६४ १४ व्याचन राज्या राज्या बहाश, मृश्यित्।

यादन द्वारा राज्यातना इव पर्रा स्था। चानुपासी STATE OF

६ - इन्यान रक्ष इत् । इ. १४ त १५ व. १८ व्याप महावाहणी

- attato a in the transfer

१-वीरन्द्रेष । निल्बिमिधिन मीरन्तिल मिला हुमा जल; निहोहक से विनरीं की नवेण किया जाता है। --विविवित्याच्यूनक-संस्कार । शिह्य-जटायु से नाःपर्य है ।

१-विश्वन (असके पास कृष्ट्र भी न हो, पहादी गृरीय।

५--राप=बाद्धा, स्त्रस्य । ६—जनग=जन्पनिक्ला । व्यनभं=व्यनिष्ट, सुगई । विवह

सहाहें। 4—स्वर=स्वर्ग ।

१--मंजीवनी=बह धृटी जिसके संघन से मृतपाय भी जी वटना है। कृषजायगा≈श्राप चल वसेंगे।

र—नायु का पुत्र ह्नुमान । बंदा≃बंदनीय ।

३५--- व्रजभाषा

^१—भुषन-विदिन-लोक-प्रसिद्ध । सुवि=भृमि । रस_्पूर्ण=श्रानंद-मय । विधुराई=पैताई । मंजु=सुन्दर । सुधराई=चतुराई ।

--काम श्रभिराम=इन्छाएँ पृरी फरनेवाले । सहदय मनि= मरस युद्धियांल ।

२—न्यरविद=कमल । मकरंद=पराग । मलिद=भौरा । विरमत = रमते हैं।

४--कलिदिनि-यमुना । जीवन-जल ।

५--किसलहर≈कि के पापों को नाश करनेवाला । मज्ञ-सुन्दर । सुचि=ग्रुचि, पवित्र । ६--पूल=किनारा । कुसुमित=फूले हुए। श्रोक=स्थान । निकंदन--

नाराकर्ना । सुकुलित=प्रफुहित ।

84. हिन्दी-प्रान्धनावरी =--वार्ता-रचना, कविया । र्वेजय=रेगा हुआ । भाकर=यार्तिः शहम-स्थान । ८-- त्रसुकता उत्पंठा । रहाँग-रहमि=एस-पृत्त - करं। ^{अति} भ्रमर । भ्राजित-शोभित है। ५-- आत्मता पुत्री । ध्यक्तः प्रकट । १०--रस्तेन:=आनंद की सान । बोग=मेन । विवेनी गंगा, वर्षन श्रीर सरत्वती की संयुक्त घाराएं । ११-- तथारथ यथाथ । मचित्रचित्र एत करके । १२--- प्रयंत्रस="प्रयंशय, बार्डा । आर्थ व्यार्थ । ^१३---वृद्धि=कमी। परत चाई पूरी करती व्याई है। सिरहारें: १४ - मिनाम जिलाव र क्रम्मिना सील राजाला 🚁 🚁 । प्रथम पावस · - - 4111111 + 6 1 ्र निरंत्र प्रविद्या व निरंदा स्थानीय ar a Miller of the fire - - रक्षत्रकार क्रांग्रहेर व्यवस्था । स्थान क्षा स्थान क्षा स्थान 2 -5 Mar HATE BUILT BURGET to the rest of the second second second second . - -- सम्यान यह का क्रिनयस्त्रामन were the same and the same and the १-भीग=भीड्।

^५—हिगय गयो=स्वा गया। टकलाय=टक लगाकर। नै=नम्र। दीठि=हि।

६-भव-विभव=सांसारिक ऐश्वर्य । विभृति=ईश्वरता । सहिम= दवकर, इर कर ।

७—कंथा=कथरो, गुरुई। ।

८-दाय=म्बल्य । संकेत=इशास । श्रादेश=श्राजा ।

९-परिधान≔वस्त्र । सैनिक=सिपाही ।

१०-विहाय=छोडकर्।

११—बास=बन्धा क्याय⇒गेहवा, संन्यासियों का बन्धा

^{१३}—मर्त्य=मरनेवाले, श्रनित्य । वर्म=कवच । कतहँ≈कहीं । श्रेट्रर=यहुत ही श्रेष्ट । तथागत-युद्ध । नत=मुका हुत्रा ।

निधि≃संपनि । १४—चकराय≔चकित हो कर । संपुटित≈भरे हुए हैं, ब्याप हैं ।

्यापाम, सन्यक् हा कर । मुतुटत=भर हुए हे, ज्याम है। पि—श्रष्टांग मर्गा=बोद्ध थर्म के श्रुनुसार सम्यक् दृष्टि, सम्यक् व्यायाम, सन्यक् संयम श्रादि श्राठ साधन, जिन्हें ताधन

से जीव 'गुट्ट' हो जाता है । बुस्तव=समंभा कर्र्श रंकः गुरीव। जीच-शुट्ट। सोपान=सीटी। १६—जरठ-वृद्धा अवचक=संसार का, जन्म-सरण का चक्र।

निर्वान-मोस् । प्रामाद-महल । पीयृप=श्रमृत । १७--यशोधग=गीतम यद्ध की स्वी । श्राभा=कांति ।

३७--पार्थ-प्रतिज्ञा

६—करतन हथेली । गुगल=होनों ।

२--पालग्वि=प्रात कालीन सूर्य । बोधित हुआ-मालुम हुआ ।

942

हिन्दी-पच-रस्रावली ३--- धर्मिमा=लासी । धनस्यधारा ।

योप=शब्द । फण=कत । कण=मांप ।

' --- शर रुच वाग का निशामा ।

··・ ドルタノー・サイネ・フ はダー・ワケイダー

—३५वल-३र्टाफ वयदाः

2"11 -1 -11

६--- उनाप- जलन । धारियम=राजुकी की मारनेवाने । कर्मा क्रोध । च चला=विज्ञली । जबद=मेघ ।

> --पार्थ=एया के पुत्र श्राप्ति । सत्यग्वशीय ।

·--परित हुए-चिम गरे । विस्तृतिन=ऋइकते हुए।परा=कमड

—किस्रर=देव-यामि विशेष । स न्दृति कस्दरव=गोरन कर्षूण

धरयुन=१२^लणु भगवान *चाएला पुरुवानि≈मा*च्।

-- 'वपचर=साप 'वर्षन- वस बाहव-समूद्र की बाग , स्थान

43.00

४--नामापुट=तर्ये, नधुने । भृरि-यहुन । भीपगःभवंदर ।



Contemporal

a 1 des estra des rechas respectives (destinations of the control of the control

. 1 - , 1 ---

The state of the s

الرو من المراد المر المراد ال

المنظوع على سي الدائد الدائد



+131 Floor + 1

of the first term of the state of the first term. error it is realist a fer sterrite deser in the control organization and before en an en con and land and lorded port of the state of the state of the state of or with a contract of the grade of the Miller Miller ar me to a fift field or to it is a trust different within the contract was now a construction of T- 0 , TT. 4A 144 FET 11 44-55.

e . cint . . . c.11 11

. .. 1 7



१९८ हिन्दी-पद्य-रानावडी

रसायानि —यद दिखी के पठान थे। शादी स्तःशात में इनका जन्म हुआ। पहले इनका नाम इयराईस था। सरण रहे, यद पिदानीवाले इयराईस नहीं थे। इनका जन्म अनुमानते सबत् १६६५ के खनामा हुआ। युवावस्था में यह हिस्सी बनिये के लड़के पर बाँ हो भाराक थे। पीछे, यह पेम श्रीहरण की और जट्ट गया। यद गुमाई छिट्टलायजी के हुपापात्र शिष्य थे। २८४ बैप्पायों को बानों से इनकी भी बाती है। स्तस्त्रीन्त्री प्रमान्त्री मामें और यैजाब थे। इन्होंने मत्रमापा में बड़ी ही सफळवा के नाम बिता सी है। इनकी भाषा में पराइक्टबर हुए कम है। बेम का मी इन्होंने पाम पित्र सीपार्ट दि दहत है। कम

है। 'सुजान रमगान' चीर 'में मन्यादिका' नामक इनके दो मन्य 'मनने हैं। चनपान से इनका देहारन सकत १६८५ के स्वाधी

₹का ।

a issue granf

सेनावित-स्मापित का प्रथम सक्त १६६५ के हमभग हका। यह प्यत्याहर जिस कुलक्याहर, के विवासी थे। पत्ता हा साम गराधर चीर प्रतास्त का प्रकृतास था। हमासाति साम काह साम कर का मूल था। इसता परिचय मेनावित समय चान पर करिन में दिना है। यहन यह चहे हो संगाधी हात्रे वे पाट नावरन ता गये। उत्तार चीर हात्त, तीनो राज्या च हका। इसते किया है। यह समयुष्ट हा महाहति द हमहा रचन अन हार स सामी नहीं है। इनके सिन्दे हात्रिन वह हो सुद्दार है इनका सिन्दा है। इनके सिन्दे व्यवन वह हो सुद्दार है इनका सिन्दा होना-साक्षाहर सम्बद्ध



दिन्दीन्यय-जावशी 250

प्राप्त हुई थी । इनका जन्म, अनुमानतः, संबग् १६३० में हुना ! इतका जन्म-स्थान तिकवॉपुर (विभिन्नमपुर) माना जाना है, जी कानपुर किन्दे में यमुना के फिनारे पर है । यह बाम्यवुटन मामण

थे। पिता का नाम रम्नाकर जियाती था। यह चार भाई थे। नारो ही कवि थे। मनिरास तो महाकृषि थे। भूपण के एक्सा

व्याप्रयस्ता वीरकेसरी शिवासी थे। इतेशे करिया में मार्नायमा कुर पृष्ट कर भनि हुई है। दिशी-माहित्य में भूपण बैंग रन के एक मात्र महाकवि हैं, दूनमें शनिक भी अन्युन्ति नहीं ! इनकी करिना चात्र भी भूनवाय दिन्दू गानि की निमाय मर्मी में जीत का संचार करती है। सब विकासर बर्मीन पांचन्ह

धन्य परस्य, विनने शिवसामन्यण श्रीर शिवाधायनी सन्ति विसिद्ध हैं। इतका शरीराञ्च सच्च १४४० के लगभग हुआ। सनियास- पर महाकृति तृषण के लीते भाई थे। इतना मोबन कात प्रनयन मायम १८०४ से १००४ सक है। पूरी क बर राज राज बार्डावर जा इबह आववसामा व । जिस

रकर भारत रारस्य है ताकड़ कांच्य व, बसी प्रकार मतिरास अप्रत्म के राज करते वा अवस्था क्यांचा के प्रकार शहर है यस न क्षेत्र व . १८ १० दर वर दशा है वाला यश ही गुड मा दीर र १९ उपर स्व प्रवास सं तित्रसम चीर

लारत प्राच तथ तथ वाच विष्या मा अल्ल का अवदेश ब्राह्म १०३ छ। । राजा रागा गाहुच्या हारका अस्त्र अस्ति where tower and went a father that what

राम र मन करेक उपन का कामान नह प्रति व भी प्राप्त were as we a did not got as are to feet



हिम्दी-पत्त समायळी

नागरीदास—इनका चामली नाम मार्वतिहरू या । यह त्यानहार्वास थे। इनका जम्म संबग् १०५६ में हुचा। यह हाराज राजनिक के यूप थे। महाराज मार्गतिम्द युँ वीर दे निर्मेष थे। इस माराग राजनाती करनाग में थी। इनके गई वरादुर्गमेंद इनमें सत्ता जावुने नाग्युन रहा थे। यह-कटड़ क वरक दश्रीन राजवाद छोड़ दिया और ममयाम करने गै। अलन्द्रशान से इनका च्याप केम था। यह बड़ानें दीरण थे। करिया में च्याया नाम गामीदाम या नागरिया

गर्ध वराहर्गीयह इनमें सहा जानुं-भागानं न रहते में । मुल्यहरूँ । जवकर इन्होंने राजधाद खेंद्र हिंगा और जाम याग करने । गो । अन्न-दूरान्त में इनका चायुर्व के या। यह वरमान्त्र शिष्य थे। कशिया में चायना साम मागगीदाम या सागगीया थन व। यह सहाराज वर्ष हो दिराफ, चातुगांगी और प्रेष किंगा । अस्य प्रस्तान वर्ष हो दिराफ, चातुगांगी और प्रीप्तान्ति किंगा । अस्य प्रस्तान कर्मानं अस्य खादेन्योदे प्रथ्य निर्मय। चींगा कीं राजा प्रज्ञ कर्म है । कर्दा कर्दा वर प्रस्ता और राजपुरानी भाषा काम दे हैं। रचना वर्ष हो यह स्वसा और व्यवसादियों है। साम राज्यान वर्ष हो स्वसा दे स्वसा वर्षा । वर्ष स्वस्त व्यवसादियों है। राजीकर्य कर्मवार्ष क्रमण प्रस्तान चार्यकर व्यवसाद

र है अनुसानत देवर तरन से उन्हेस हुआ वहा जाए है। नहें कुराई करी बहुत पहार्द हैं नीतिश्वाय पर दूसरी में हैं उन्हें अन्य है पहार्च के हा है इसी हुआई का स्थापन में है बनन है कि उन्हें हुआई का स्थापन साथई हुआ आप है हर ने बुद्ध हैं उन्हें देवहां जैसे उपहार्थ स्थापन है हर ने बुद्ध हैं अनुसान से स्थापन से साथ है हैं हैं बहुत के स्थापन है सनुसान से साथ से साथ है हैं हैं

वाह्यात्क्रण तथार कांत्र वाह्य कर कर अन्य अवस् १८१० में रक्षा १८०० जरमार र वाह है। यह देशन बाधात ये १ वेसे



404

भारतेन्तु हरिश्यत्व-प्रतिहास प्रतिप्र अपगाउ रेग राव बातकृत्या के बना सं, संबत् १९०० में बासी से, बाद्वहरियण्ड का जन्म हुया। इतके पिता का नाम गोशायचंद्र यो. जो इह

भागंद्र सन्द्र स्त्रीर कृति थे। कृति-संसार में बाल गांगाज्येंद्रकी शिरियरतान के नाम से प्रशिव हैं। बाबु गावानचंद्रभी हरिस्वी का प का को काल्यायाचा है। ती छोड़ कर स्वरोत्रामी हो गाँच मर क बागर ना थे ही, पिया के स्वमस्य ही जाने पर यह सार्य हा तथ आमा शिवयताच तिलागितन्त्र क्रम है विचातक से । अनी

इन्डान कामल ठाफ श्रीतर मां पत्ती । हिंती की क्षोर वापुमाह्य की वस दला दिन बहन हता। सच म पहन दल्हाने कहि वयम मुवा जात का वक सानिक पत्र निकाला । इसक बात की हमी

कई दवलविकार क्रिकार्ड क्रिया क्रिया वर्ष भाग गर्ह

इंड इन्ट न नमा, नामा । कारताचार न व्यक्ति देव MM ... राज . १ व .. स्वार छ। सर्वहत क

gar an en grant and an an an esta total 40 - 1000 4 . 4 T. W. C & M 31 MI were in a few mes as "

are the second of the second er seas a sea con els generales

dayne to a ser an nard and

प्रत्य छित्र । जान पड़ता है, वाबूसाहव साहित्य-नेवा करने के व्यि ही घवर्ताणं हुए थे । जब तक हिंदी भाषा रहेगी, नव तक भारतेन्द्र बाबू हरिश्चन्द्र का भी नाम रहेगा । मंबन् १९४२ में यह गोलोकपाम को सिधार गये ।

मतापनारायण मिश्र-मिश्रजी का जन्म संवत् १९१३ में हुया । इनके विता का नाम वंटित संयटाप्रसाद था । यह कान्य-पृथ्य माताण थे। इन्होंने हिन्दी, उर्द, फारसी और संस्कृत में पण्डी योग्यता प्राप्त परली । छांगरेजी या बहुत ही साधारण ज्ञान था। बाबू हरिश्चन्द्र की रचनाची को यह विद्यार्थि-अवस्था सं भी मह चोव से पट्ने थे। उनके पटन से कविता करने की श्लीर यह प्रवृत्त का गये। इतक, कांबतान्यक कानपुर के सुप्रसिद्ध कवि "रुलित । तो जनाप्रसार विषाती । ध । सन् १०८३ म भिधाओं न 'माद्याण नासव १व मासिय पन्न निष्यालना गुरु किया । यह बहारी विकास एक एक का एक स्वयं तक विकास हो। हार दिस्त किल्ला १ व्याप्त १० व स्थावन स्थापन स्थापन स्थापन race of the second second second second second भाषा. . . . या साम कराइ वाली है में श ware a second constant the contract

The second secon

कानपुर म प्रनदी कवि बन्शक्ति का विकास होते. अगा । वर्ग व भी देश सामा जनमाति में यह विशि मा कार्य कार्त मों। हरदुषाराज स यह खर्र देश समग्रे जाने हैं। आजका भी खड़ बैगक ही कान है। यहन तम अस्थाना से कनना करों है कीह राजियों में करते जाते। कड़ीबेटी की इस्ताने कड़ी मरिमार्ने रर ह व दिया है। जावकी रचमाओं में विकास करें भागा म वाडे जाती है । श्राप शांत्रिक और मुक्तक मानी प्रकार है ह रा भ करो। की समाज संख्या रहने हैं। यह माधारा वन की है। समानाम र न्यान विमानत में कडिया-तन बार की की मं कर इंटरन हैं । इनहीं की पनिभा दिएतों में ही मिले शर्मा विकालियमः ना दें व्यापन प्रमुख कविनार वान संगाउ संयोग्दर्भी हा राजा है। इताल खडन वर महाची की करिया बहार रजाप मार्थना रे कांच सामा म माप का मात बहु Exist grame to trate affettettele aufgatet साम रहा स्पार का यह सावका क्यान सर्वा हरू the same and the same sure of STREET THE POST OF THE POST my arry ore \$ 479 we can an analysis and the second ere conto a management

(१२की वर्गनामा १२वी

801



... रिओ-पश्चनाएसी

का कामहारे । बाप मनाका महामारी । वर्ष , प्रामी, बालान, बराजा और दिन्दी में बाप की बारजी बीम्मार है। मिल संप्राप क याचा स्वानंतरका आप क कवितानुक है। बाप बीम को

उप नाजनात् । सन्दर कानुनात् रह नाव है। यान पेहात ने ा है की र कार्या स रिज्य विश्व विश्वादय में दिन्ती के भारतिक्र मान्यक है । तथ बीर वण बाले ही बाव दें भी बाली की दियां र . वर व भाग न र वाचा वे कविता दिस्यते थे, श्रम स्वरीरीकी

न व्यवस्त है। बान्य का बानुकाल महाकारण विगयनाम कौर र र १ १ कार बीवर मिना संवाह से तक मा महे थी रहे हैं

with a strong of the fact of the design at the street and हे कार करता माजना सम्मातन के चीवश्व व्यक्तिया के

war are tout it a to the total total and and the

"Estimate of the that are estudie at

4 / P

The second secon

" ANTE WITH A F OF MAN A WAY OF A SHEET STORM

San ethographic for the sole of the second

में विरले ही मिलेंगे। श्राप का जीवन, वाटाव में,म्हुब्य श्रीर धन्य है।

जगलाधदास 'रलाकर'—रलाकरजी का जन्म काशी पुरी में, मंबन १९२२ में, हुआ । यह खमवाल वैश्य खौर राधा-रमणी वैष्युव हैं। इन के पिता का नाम बाबू पुरुषोत्तमदास था । मन १८९२ में खापने बी० ए० को परीत्ता पास की। सन् १९०२ में यह स्व० ख्रयोध्या-नरेश के प्राइवट सेकटरी के पद पर नियुक्त हुए। पीछे श्रीमहारानी साहवा ने इन्हें खपना प्राइवेट सेकटरी वना लिया। खब भी खाप एक प्रकार से उसी पद पर हैं। कारमी के खाप खन्छे जाता हैं। कविता बनभापा में करते हैं। खाप का माहिष्यक ज्ञान बहुत बहा-चढ़ा है। कविता मरम और भावमयी होती है।

राय देवीप्रसाद 'पूरा' — रायमाहव भदरम, जिला-कानपुर, वे रहनवाल थे। जवलपुर में इन्होंने शिचा पाई थी। द्वाप बीठ एट, बीठ एलट थे। कानपुर में बकालत करने थे। धार ही दिनों में नामी बकील हो गये। नगर भर के लोग इन्हें चाहत थे, क्यांक बड़े ही मिलनमार, परोपकारी और सन्चे थे। रायमाहव मार्वजनिक कार्यी में सदा भाग लिया करने थे। आप चिद्यांसाफिस्ट थे। सनातनवर्म पर बड़ी श्रद्धा थी। हिंदी पर इनका विशेष कप से प्रेम था। यारावर बावन और चट्टकल्य मानुक्रमार नाटक पुणर्जी की उनम रचनात्र्यों में हैं। आपकी

कविना वही चुटांनी होती थी । कविना खिषकतर यह इजभाषा में करने थे । इनका माहित्यिक क्षान प्रामाणिक माना जाता था । इस युग केहिटी-कवियो में पूर्णती का स्थान, वास्तव में, उंचा है ।

हिंग्यो प्रमुज्यासधी त्म बराय प्राप्त को बनी हो। सरस कीर साववर्ण कविता है।

र ने भारित्य वे निर्मे का कायरत ही हुए ही के दुर्घ प्रत्य राज er andrea kear anisa e

केनिक्तांशरण गुप्त-विस्ताव, वीवी, वे शुनि का

ब्बल ब्लबल १८५३ से हुन्छ । इन्द्रं किता क्रांत्सकान की शहर मा प रहत है । रहत वा बीच जाड़ हैं, जितन नीविधासन शस्त्रजी रा करता कार्यना अस्त है। सम में सरीचेशी के बरन करि है। बन्दानक करिया जात्य संभागी हे बनायत थी। भारता कारत है। च्लाइना ना इत्था हातवा बा बहे ही चार्डे में पहले हैं। इनकी ना हुई वस्तवा से सरहरू साहना कौर अवहार वाह बहुत वीसाई ं रंगस्य मंद्रा बरियारे त्यन कीर साथ सुत्रसंहत होता है। लन्दमा का प्राप्त सुप्तरा का प्रश्च प्रस्ता के साहती क्षाव है अबाद इनका मार माम बीच फाररवार है तन * E # Fact 17 Hz . 8

